औसत से ऊपर जीना

मसीह की समानता का ओजस्वी प्रदर्शन

विलियम मैक डोनाल्ड

Authentic™

HYDERABAD

Ausath Se Upar Jeena
(Hindi)

Living Above the Average
by William MacDonald

Copyright © 2001 by William MacDonald

First Hindi edition 2012
ISBN 978-93-81905-92-0

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means—electronic, mechanical, digital, photocopy, recording, or any other—without prior permission of the publisher.

Published by
Authentic Books
Logos Bhavan, Jeedimetla Village, Secunderabad 500 067, Andhra Pradesh.
www.authenticindia.in

Authentic Books is an imprint of Authentic Media, the publishing division of OM Books Foundation.

Printed and bound in India by
Authentic Media, Secunderabad 500 067

विषय सूचि

1. यीशु क्या करेंगे? 7
2. परमेश्वर का एक मित्र 11
3. प्रेम का प्रेरित 13
4. दुःख में महान शान्ति 19
5. आज्ञाकारिता की कीमत 23
6. टूटापन जो जीतता है 27
7. कोई सेवा निम्न नहीं होती 31
8. स्कॉटलैंड का पुत्र जिसने उसे गर्वित किया 33
9. जनरल जिसने अपने आप को नम्र किया 39
10. रोग में और स्वास्थ में 41
11. मेरा कप्तान 45
12. सामाजिक बहिस्कृत का मित्र 49
13. दया से घृणा की क्षतिपूर्ति करना 51
14. उसने दूसरा गाल फेर दिया 55
15. तीव्रतम गरमाहट की आग 57
16. अपने शत्रुओं से प्रेम करो 59
17. क्षमा करना दैविय है 63
18. जहां इच्छा है 65
19. थूकना और शर्म को सहना 69
20. रद्दी/कूड़ा–करकट का यहूदी व्यापारी 71
21. सम्राट के तलवार बाज 73
22. प्रतिज्ञा के साथ प्रथम आज्ञा 77
23. परमेश्वर जो प्रेम करता है 79

24. अविश्वसनीय अनुग्रह 85
25. उसने गरीबों से प्रेम किया 89
26. कलीसिया में नंगे पांव 91
27. अमाजोन के ऊपर मार गिराया 93
28. लोईस और सफाई अभियन्ता 97
29. ये सब बनाने में समय असफल होगा 101
30. औसत से ऊपर जीना 107
अन्त के नोटस् 109

एक

यीशु क्या करेंगे?

पर्वत पर रात्रि प्रार्थना के बाद, यीशु ने बारह चेलों का चुनाव किया। उसने उन्हें प्रेरित कहा क्योंकि वह उन्हें बाहर सुसमाचार फैलाने भेजने वाला था। शब्द प्रेरित का मतलब है "एक जो भेजा गया"।

जब वे नीचे उतरे यीशु ने उन्हें उनके मिशन के लिये प्रशिक्षित करना आरम्भ किया। उन्हें त्यागपूर्ण जीवन जीना था, उन्हें अपनी बुलाहट के प्रति गम्भीर होना था, उन्हें अलोकप्रिय होना था और उसकी खातिर यातनाओं को सहना था।

तब उसने वर्णन किया कि उन्हें किस प्रकार व्यवहार करना है।

> तुम जो सुनते हो कहता हूँ: अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुमसे घृणा करते उनका भला करो, जो तुम्हें श्राप देते उन्हें आशीष दो, उनके लिये प्रार्थना करो जो तुम्हें जबरन इस्तेमाल करते, जो तुम्हें एक गाल पर मारे उसको दूसरा भी फेर दो, जो तुम्हारा कुर्त्ता ले उसे लेने से ना रोक, जो तुम्हारा सामान ले, उससे वापस ना लो और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें उनके साथ तुम भी वैसा करो।
>
> यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखो तो तुम्हारी क्या बड़ाई। क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखते हैं। और यदि तुम अपने भलाई करने वालों ही के साथ भलाई करते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई, क्योंकि पापी भी ऐसा करते हैं। और यदि तुम उन्हें उधार दो जिनसे फिर

> पाने की आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं कि उतना ही फिर पायें। बरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो और भलाई करो और फिर पाने की आस ना रखकर उधार दो और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है। जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है वैसे ही तुम भी दयावन्त बनों" (लूका 6:27–36)।

प्रभु की इन आज्ञाओं पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? क्या आप कहते हो, "हां! ऐसा ही मैं विश्वास करता हूं। और ऐसा ही हम मसीही विश्वास करते हैं"। यदि आप आसान महसूस करते हो कि हम सब इसी प्रकार जीते हैं तो मेरा सुझाव है कि आप इस हिस्से को फिर पढ़ें और सदमा लगेगा कि ये क्या कह रहा है।

प्रभु जो यहां सिखा रहा है जीवन का दूसरा संसारिक तरीका – ये वो व्यवहार है जो स्वाभाविक नहीं है। ये वो चलना है जो मांस और लहू से ऊपर उठाता है, एक जीवन जो उच्च स्थान पर है, यीशु ये आग्रह कर रहे हैं कि मेरा जीवन मेरे पड़ोसी से भिन्न हो। यदि मैं विशिष्ट नहीं हूं तो मैं उनसे कह रहा हूं, "घबराओ नहीं, मैं तुम्हारी ही तरह हूं"। यदि भिन्नता नहीं है तो वे क्यों आपकी सुनें। जब आप मसीह का दावा उन पर डालने की खोज करते हो? ये भिन्नता है जो काम करती है। ये वो जीवन है जो औसत से ऊपर है।

यदि दूसरी ओर वे मेरे और उनके जीवन में बड़ी भिन्नता देखते हैं तो वे इसका कारण खोजते हैं और इस प्रकार मेरे लिये सुसमाचार बताने का द्वार खुलता हैं। मेज़र आइन थोमस, टोर्च बियेर्सस के संस्थापक कहते हैं:

> ये केवल उस समय है जब आपका जीवन पड़ोसियों को चकरा देता है कि आप उन पर प्रभाव डालते हैं। तो ये दूसरों के लिये स्पष्ट रूप से प्रगट है कि जिस प्रकार का जीवन आप जीते हो ना केवल उच्च प्रशंसनीय है पर ये सभी मानव वर्णन से ऊपर है। ये मानव की नकल करने की योग्यता से ऊपर है और फिर भी वे इसे समझेंगे, स्पष्ट रूप से परमेश्वर की आपको पुनः आप में उत्पन्न करने की योग्यताओं के परिणाम को संक्षिप्त में, इसका मतलब

है कि आपके साथियों को आश्वस्त होना चाहिये कि प्रभु यीशु मसीह जिसके विषय में आप बात करते हैं, स्वयं आवश्यक रूप से आप जो जीवन जीते हैं उसका साधन बन जाते हैं।[1]

गैर मसीही लोग अक्सर वीरता का कार्य करते हैं, वे गुर्दे की बीमारी के लिये अपने गुर्दे दान करते हैं। वे वृद्ध माता–पिता की अतिरिक्त देखभाल करते हैं। वे परोपकारी कारणों के लिये उदारता से देते हैं, हम, फिर भी बुलाये गये हैं कि जो बचाये नहीं गये उनके लिये सामान्य से बढ़कर करें।

ये सब कहने के बाद, हमें ये जोड़ना चाहिये कि हर समय एक मसीही मसीह की नाईं व्यवहार प्रगट करता है, कोई गारन्टी नहीं है कि बिना उद्धार पाये उद्धारकर्ता के लिये जीते जायेंगे। जैसा प्रभु ने किया वैसा ही करने के लिये हम जिम्मेवार हैं, पर अविश्वासी अभी भी उस पर विश्वास करने के लिये जिम्मेवार हैं। हमेशा कोई होगा जो उसकी ओर मुड़े।

पर सब कुछ ये नहीं है, यदि आप मसीह का कोट अच्छी तरह पहनते हैं, तो वहां वो हैं जो सोचेंगे कि मानसिक रूप से पागल है, कि आपने इसे खो दिया है। आप मुश्किल से बेहतर इलाज उसकी अपेक्षा पा सकते हैं। शिष्य अपने गुरु से ऊपर नहीं है।

कई वर्ष पहले रुसी उपन्यासकार फायोडोर डोस्टोरोवेस्की ने एक पुस्तक लिखी[2]। जिसमें उसने राजकुमार मिशकिन को एक सिद्ध मानवता का प्रतीक प्रगट किया। लोग राजकुमार को समझ नहीं सके। उन्होंने सोचा वह पागल था। पुस्तक का शीर्षक "मूर्ख" था। हम जितना मसीह की स्वरूपता में होते जाते तो उतना ही हम मूर्ख होने का खतरा उठाते हैं।

तो पौलुस प्रेरित सही था। हम किसी के लिये "जीवन के प्रति जीवन" के स्वाद हैं, और दूसरों के लिये "मृत्यु में मृत्यु" का स्वाद हैं। हम या तो उन्हें प्रभावित चकरा/घबरा कर करते या ईश्वरीय तरीके करके गड़बड़ी में डालते हैं। दोनों ही घटनाओं में हम अपने को उसकी नकल कर सर्वोच्च के पुत्र होने को प्रगट करते हैं।

आने वाले पृष्ठों में हम बहुत से महान क्षणों के विषय समय में

सोचेंगे जब मसीहियों ने यीशु के कथन को असल में शत्रुओं से प्रेम करने के द्वारा लिया, अपने शत्रुओं को क्षमा करके, बुराई के बदले भलाई करके, बिना विरोध सहने के बिना वापस पाने की आशा से देने के द्वारा, संक्षिप्त में अपने आप से पूछने के द्वारा "कि यीशु क्या करेगा? और तब इसे करना।

दो

परमेश्वर का एक मित्र

हेनरी सूसो एक जर्मन रहस्यवादी जो 1300 में जिया। वह, पॉल टरस्टीजन और कुछ भक्त विश्वासी "परमेश्वर के मित्र" जाने जाते थे। ये वे पुरुष थे जो "सबसे उच्च" के गुप्त स्थान में रहते थे। वे भजन 1 के धन्य व्यक्ति में से थे जिनकी प्रसन्नता प्रभु की व्यवस्था में थी और जो रात दिन उसकी व्यवस्था पर ध्यान करते है"। उनकी नागरिकता स्वर्ग में थी। उनके जीवन की पवित्रता लोकप्रसिद्ध थी।

एक दिन सूसो के दरवाजे पर दस्तक हुई। जब उसने द्वार खोला–एक महिला गोद में बच्चा लिये हुए खड़ी थी जिसे उसने कभी नहीं देखा था। बिना चितौनी दिये उसने बच्चे को उसकी बाहों में दे दिया ये कहते हुए, "यह तुम्हारे पाप का फल है" और चली गई।

सूसो आश्चर्यचकित था। महिला के इस दोष ने जैसे तड़कती बिजली ने मानो मारा हो। वह उस छोटे बच्चे को बांह में लिये खड़ा था। कोई शक नहीं कि ये महिला के पाप का फल था पर ये सूसों का नहीं था। आज उसने बच्चे को प्लास्टिक की थैली में डालकर कूड़े की गाड़ी में फैंक दिया होगा। पर उसके लिये ये बहुत महत्वपूर्ण था कि दोष किसी और पर मढ़ दें। ये खबर शीघ्र ही नगर में फैल गई, सूसो को एक धार्मिक धोखे में उजागर करके, पर ना वह दिखावटी था ना ही धोखेबाज। वह केवल पीछे हार कर प्रभु को पुकार सकता था।

"प्रभु मैं क्या करूं? आप जानते हो मैं निर्दोष हूं"।

उसके पास साधारण स्पष्ट उत्तर आया: "वैसा ही कर जो मैंने किया; दूसरों के पाप को सह ले और कुछ मत कह"। सूसो को ताज़ा क्रूस का दृश्य नजर आया और उसकी आत्मा में शान्ति आई।

उसने बच्चे का पालन पोषण किया मानो वह उसका अपना है, उसने कभी भी इस दोष का सामना नहीं किया।

वर्षों बाद वह पापी महिला नगर में वापस आई और लोगों को बताया कि सूसो निर्दोष था, कि उसका दोष झूठा था। हानि की जा चुकी थी पर परमेश्वर ने उसे भलाई में बदल दिया था। सूसो और अधिक मसीह की समानता में बन गया—उसने विजय पा ली थी।

हम पुराने नियम में पढ़ते हैं कि यूसुफ ने हृदय की पीड़ा का अनुभव किया और झूठे दोष का अन्याय उस पर पड़ा। उस पर बलात्कार का दोष लगाया गया, इस पाप के लिये उसके वस्त्र को सबूत के रूप में प्रस्तुत किया गया। फिर भी उसने इस मामले को समर्पित किया, दोष निवारण के लिये उस पर भरोसा किया।

यीशु पर झूठे दोष मढ़े गये। उसके शत्रुओं ने आग्रह किया कि वह बिना विवाह के पैदा हुआ। उन्होंने इसे बरकरार रखा कि उसने शैतान की सामर्थ से आश्चर्यकर्म किये। उन्होंने उस पर दोष लगाया कि वह रोमी सरकार को पलटना चाहता था। फिर भी वह अत्यन्त कठिन समय में कहने योग्य था। "इसके बावजूद पिता जो तेरी दृष्टि में ठीक है"।

हम उसके उदाहरण से सीखते हैं कि हमें अपने आपको सही नहीं ठहराना है या कानूनी राहत नहीं लेनी है। परमेश्वर पाप को स्वयं बाहर होने में कार्य करने देता है, दोष लगाने वाले को उजागर करता है और दोषी/सहने वाले को सम्मान देता है।

तीन

प्रेम का प्रेरित[3]

छोटे रोबर्ट चैपमैन का पालन पोषण एक धनी परिवार में हुआ, एक ऐशो आराम के घर में, नौकर चाकरों का स्टॉफ था, और गाड़ी के बगल में परिवार की बाहों का रंग चढ़ा था। परिवार धार्मिक था पर मज़बूत मसीही नहीं था।

जब वह 20 वर्ष का हुआ, एक मित्र ने उसे जेम्स हैरिंगटन का प्रचार सुनने को आमंत्रित किया। ये चैपमैन के जीवन के परिवर्तन का बिन्दू था। कुछ दिन के बाद वह प्रभु में परिवर्तित हो गया।

उसने नये नियम से देखा कि विश्वासियों को बपतिस्मा लेना चाहिये–तो उसने मिस्टर इवेन्स से उसे बपतिस्मा देने को कहा। प्रचारक ने कहा, "क्या आप नहीं सोचते कि आपको थोड़ा इन्तजार करना चाहिये और मामले को समझें"?

चैपमैन ने उत्तर दिया, "नहीं! मुझे प्रभु की आज्ञा पालन करने में शीघ्रता करनी चाहिये" और अच्छी, आज्ञाकारी आत्मा उसके जीवन भर उससे नहीं गई।

यद्यपि वह एक सफल वकील बन गया, पर उसने महसूस किया कि प्रभु उसे पूरे समय की मसीही कार्य के लिये बुला रहा है। उसको कोई शान्ति नहीं थी जब तक उसने मसीह के पीछे चलने के लिये सब कुछ छोड़ नहीं दिया। उसके मामले में सब कुछ "छोड़ देने" का अर्थ है अपने

उद्योग को बेच देना, भविष्य का त्याग, और पद या स्थान से, प्रतिष्ठा से/कानूनी अभ्यास, प्रेक्टिस से मुंह मोड़ लेना।

उसकी अभिलाषा गरीबों के बीच काम करने की थी। सबसे अधिक "क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं" (याकूब 2:5)। क्या सुसमाचार कंगालों को न प्रचार किया जाये (मत्ती 11:5) और क्या साधारण लोग यीशु को आनन्द से नहीं सुनते (मरकुस 12:37)?

लोगों ने इसे देखाः "लम्बा, मुस्कुराता चेहरा एक जवान वकील कोमलता से गरीबों की अगुवाई करता, जर्जर/जीर्ण, अन्धी स्त्री जिसे अराधना में ले जाने वाला कोई नहीं था। जैसे वे साथ साथ गलियारे में नीचे आये तो वे उनके लिये जो धार्मिक सिद्धान्त में अच्छे थे, जो स्वार्थी और अपने व्यवहार में प्रेम ना करने वाले थे "उनके लिये जीवित निन्दा थे।

अन्त में चैपमेन झुग्गी–झोपड़ी के क्षेत्र में गया जो बार्न स्टेपल, इंग्लैंड में है, गिरे हुओं तक पहुंचना यहां दृश्य पियक्कड़पन, गन्दगी, चूहों, रोग से ग्रसित झोपड़ियां और गरीबी। फिर भी उसने लगातार लोगों में प्रचार किया और हमेशा वे उसके घर आने के लिये उनका स्वागत करता था।

उसने कहा, "बहुत से लोग मसीह को प्रचार करते हैं, पर अधिक नहीं जो मसीह को जीते हैं, मेरा महान उद्देश्य मसीह को जीना होगा"। वर्षों बाद जौन नेलसन डारबे ने उसके विषय में कहा, "जो मैं प्रचार करता हूं वह उसे जीता है"।

जब उसका ओवरकोट खराब हो गया, एक मसीही मित्र ने चैपमेन को नया दे दिया पर देने वाले ने कभी उसे पहनते नहीं देखा। उसने उसे एक गरीब को दे दिया जिसके पास नहीं था। जिसने रोबर्ट चैपमेन को परेशान किया वो ये था कि लोगों ने सोचा कि वह अद्वितीय था।

उसके इस त्यागपूर्ण जीवन शैली से उसके रिश्तेदार और मित्र

अचम्भे में थे। उनमें से एक ने उससे भेंट करने का निर्णय लिया कि देखें कि वहां क्या हो रहा है। जब चैपमेन के घर के सामने टैक्सी रूकी, रिश्तेदार ने टैक्सी चालक को डांटा।

"मैंने तुम्हें चैपमैंन के घर ले जाने को कहा", "सर, यही घर है"।

एक बार अन्दर, घुसने वाले आगन्तुक ने कहा, "रोबर्ट, तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"मैं उस स्थान में जहां प्रभु ने भेजा, सेवा कर रहा हूं"।

"आप कैसे जीते हो? क्या आपके पास बैंक का खाता है?"

"मैं प्रभु पर भरोसा करता हूं और जो आवश्यकता है उससे कहता हूं। वह कभी असफल नहीं होता, और इस प्रकार मेरा विश्वास बढ़ गया और काम जारी रहता है"।

आगन्तुक ने देखा कि वास्तव में रसोई खाली थी तो उसने कुछ भोजन खरीदने की पहल की। रोबर्ट ने उसे बताया कि विशेष बाजार को जाये। वास्तव में बाजार का मालिक मिस्टर चैपमेन के प्रति बहुत विरोधी था। जब इस दुकानदार को बड़ा ऑर्डर आर.सी. चैपमैन को देने के लिये कहा गया– तो वह आनन्द से भर गया। वह सामान के साथ चैपमेन के घर गया और आंसुओं से पश्चाताप कर क्षमा मांगी। इसके साथ ही मसीह को उद्धारकर्ता स्वीकार किया।

पहुंनाई सेवकाई का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। चैपमैन ने सड़क के उस पार एक घर खरीदा और परमेश्वर से उसकी पसन्द के महमानों को भोजन को कहा। इसकी कोई कीमत नहीं थी और जाते समय किसी से नहीं मांगा जाता था। मेहमानों को उनके बूट, जूते घर के दरवाजे के बाहर रखने को हर रात कहा जाता था। सुबह सवेरे उन सब पर पालिश की जाती थी। ये चैपमेन का मेहमानों के पैर धोने का तरीका था। ये पहुंनाई एक कुंवारे के द्वारा दिखाई गई–मेहमानों को विश्वास के जीवन के विषय सिखाना था और प्रभु के लोगों की सेवा करना है।

"यहां मेज पर बड़ी प्रसन्नता थी। बुद्धि के और अनुग्रह के वचन लगातार सुने जाते थे। पर वार्ता के लिये कोई स्थान नहीं था कि छिछोरी

बातों में इसे बिगाड़ा जाये। ये घर का नियम था कि कोई भी अनुपस्थित व्यक्ति के विषय में बुरा नहीं बोलेगा और इस नियम का कोई भी उल्लंघन निन्दा समझा जायेगा।"

वे गुण जिनके द्वारा रोबर्ट चैपमेन जाना जाता था वह प्रेम था। उसके एक आलोचक ने ये प्रण किया कि वह उसके साथ कभी कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा – अब वह फिर उससे कभी बात नहीं करेगा। एक दिन उन्होंने नीचे अपने आपको बगल में चलते हुए पाया। चैपमेन जानता था जो कुछ दूसरे ने इसके विषय में कहा था, पर जब वे मिले जो रोबर्ट ने अपनी बाहें उसके ऊपर डालकर कहा, "प्रिय भाई, परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, मसीह आपसे प्रेम करता है और मैं आप से प्रेम करता हूं"। उस व्यक्ति ने पश्चाताप किया और पुनः कलीसिया में संगति की।

ये अद्भुत लगता है, कि एक मित्र ने विदेशी देश से एक पत्र डाक में डाला पता था : प्रेम की यूनीवर्सिटी, इंग्लैंड। ये उसे मिल गया।

मिस्टर चैपमेन को कलीसिया में साम्प्रदायिक विभाजन को पसन्द नहीं करता था पर उसने हर सच्चे परमेश्वर के पुत्र/पुत्री से प्रेम किया। भले ही कलीसिया का सम्बन्ध किसी से भी हो। जब उनकी संगति का एक हिस्सा अलग होना चाहता था और सम्पत्ति पर अपना मालिकाना हक जताना चाहता था, वह उनकी इस मांग पर सहमत हो गया।

जब जब शहर का शासन एक जगह चाहता था जिसे चैपमेन ने खरीदी थी एक मंडली के लिये, उसने शहर को लेने दिया। वह इन मामलों को कानून में नहीं ले जाना चाहता था, अपनी एक वकील की योग्यता के बावजूद। व्यक्तिगत झगड़ों को निपटाने में, उसने जल्दी के कार्य को नहीं किया पर प्रार्थना में पुनः होना चाहा। एक बार जब उसने जे.एन. डारबे के लिये उतावली से करने के लिये डारबे ने अपने कथन का बचाव ये कहकर किया, "हम छः सप्ताहों तक इन्तजार करते रहे" चैपमेन ने उत्तर दिया। "हम छः वर्षों तक इन्तजार कर सकते थे"।

चैपमैन ने एक अनुशासित जीवन जिया प्रार्थना के साथ, वचन को पढ़ने, भोजन करने, घर घर मुलाकात करने, भूखों को खिलाना, निकाले

हुओं की सहायता करना, खुले आम प्रचार करना और बाइबल की शिक्षा देना। वह शनिवार को उपवास रखता था और अपनी लेथ मशीन पर कार्य करता था, लोगों को दान देने के लिये लकड़ी की प्लेट्स बनाता था।

उसकी जीवनी लिखने वालों में से एक फ्रेंक होम्स ने उसके प्रति कहा, "पवित्र जीने के लिये, चरित्र वज़न और स्वयं का बलिदान, कुछ ही उसकी बराबरी कर सकते, फिर भी वह साधारण और बालक की तरह नम्र था। वह एक आत्मिक दानव था, उसके बनावट का एक भी इंच संसार की प्रसिद्धि की तरीकों का नहीं था"।

मसीह ने अपने चेलों को सिखाया कि उनका जीवन औसत से ऊपर होना चाहिये यदि वे उसके लिये असर डालना चाहते हैं। हम देखते हैं कि आर.सी. चैपमैन का जीवन भरपूरी का जीवन था। उसका एक रिश्तेदार बहुत उत्तेजित था ये जानने को कि किसने रोबर्ट को इस संसार से बाहर का जीवन शैली जीने का कारण बना। उसने यह पहचाना कि "आंतरिक ताकतें जिन्हें वह स्वंय जानता था कोई चैपमेन को नहीं ले जा सकीं"। उसने ये पता लगाने का दृढ़ निश्चय किया कि उसमें क्या कमी थी। "उसने स्पष्ट रूप से चैपमेन को बताया कि उसकी स्थिति क्या थी। दोनों ने प्रार्थना और बाइबल अध्ययन साथ किया। परिणाम ये था कि जब आगन्तुक वापस घर गया वह एक बदला व्यक्ति था"।

हमारे परिष्कृत उम्र उसके भड़कीलेपन और चालबाज कौशल के साथ वह व्यक्ति जैसा रोबर्ट चैपमेन लगता है कि व्यक्ति मंगल ग्रह का है – कोई दूसरी दुनिया का है। ये सत्य है, वह था, वह सर्वोच्च के ऊंचे स्थान में जिया–सर्वशक्तिमान की छाया के आधीन"। ये लोग थे उसकी तरह जिसके विषय ए.डब्लू टोजर ने लिखाः

> एक सच्चा आत्मिक व्यक्ति वास्तव में कुछ अनोखापन है। वह अपने स्वयं के लिये नहीं जीता पर दूसरे की रूचि को बढ़ाने के लिये। वह लोगों को अपने प्रभु को सब कुछ देने को उत्साहित करता है और कोई हिस्सा नहीं मांगता या अपने लिये हिस्सा लेता, वह सम्मानित होने में आनन्दित नहीं होता पर अपने उद्धारकर्ता को दूसरों की नज़र में महिमामय होते देखता है। उसका आनन्द ये देखने में है कि उसका प्रभु बढ़ाया गया और स्वयं तिरस्कृत हुआ।

वह कुछ को पाता है जो इसके विषय में बात करने की चेष्टा करते कि जो उसकी सर्वोच्च रूचि का विषय है तो वह अक्सर शान्त है और धार्मिक शोरगुल बाजार की बातों के बीच पहले ही से संलग्न है। इसके लिये वह प्रतिष्ठा कमाता है कि वह सुस्त और अधिक गम्भीर है, तो उसे अलग किया गया और उसके और समाज के बीच की खाई बढ़ती गई। वह ऐसे मित्रों की खोज में है जिनके वस्त्रों से वह गन्धरस, और अगर और अमलतास की खुशबू जो हाथी दांत के महलों से आती है और कुछ पाता या नहीं पाता, जैसे पुरानी मरियम इन चीज़ों को अपने हृदय में रखती है।[4]

काश इसे हम अपनी लालसा बनायें कि अपनी पीढ़ी में सच्चे आत्मिक विश्वासी बनें।

चार

दु:ख में महान शान्ति

कई वर्षों बाद एच.ए. आयरनसाइड ने एक आस्ट्रेलिया की विधवा की ना भूलने वाली कहानी बताई। ये मसीही स्त्री परमेश्वर की महिला थी। उसकी आत्मिक गहराई हर एक के लिये सबूत थी। उसका जीवन प्रभु में बिना हिलने वाला विश्वास द्वारा चिन्हित था और उसके महान समर्पण द्वारा।

जब उसका पति मर गया, तो उसके पास 5 बेटे पालने के लिये छोड़ गया। उसने भजन 146:9 से सामर्थ पाई: "यहोवा अनाथों और विधवा को तो सम्भालता है"। ये वायदा था जिसे उसने उत्सुकतापूर्वक दावा किया। लड़कों का सौभाग्य प्रभु के "प्रशिक्षण और चेतावनी में बढ़ने का था"। समय पर उन सभों ने प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता अंगीकार किया।

तब युद्ध शुरु हो गया और तब 5 जवानों ने देश की बुलाहट में उत्तर दिया। शायद ये उनकी अपनी विजय के द्वारा हुआ कि वे एक ही सेना की टुकड़ी में भरती हो गये। उनकी मां ने दिन प्रतिदिन उन्हें प्रभु को समर्पित किया, ये जानते हुए कि उनका जीवन उसकी देखभाल में है।

एक दिन उसने खिड़की से बाहर देखा कि एक व्यक्ति सड़क पर चलता हुआ सामने के दरवाजे पर आ रहा है। उसने उसी समय पहचान

लिया कि वह कौन है। ये पादरी था जो गांव का पादरी था – उसे कार्य दिया गया था कि परिवारों को बताये जब उनके प्रिय लोग मारे जाते थे या युद्ध में खो जाते थे। वह भी एक भक्त मसीही था, एक जिसके पास उदासी की जिम्मेवारी थी।

वह दरवाजे पर गई वह हाथ में एक पीला तार (समाचार) लिये खड़ा था। लगता था कि समय ठहर गया है। जब उन्होंने आपस में अभिनन्दन बांटा उसने उसे अन्दर आमंत्रित किया। जब वे बैठ गये तब स्त्री ने अन्त में पूछा:

"कौन सा"?

उसके लिये उत्तर देना कठिन था। उसे डर था कि ये समाचार उसके लिये बहुत भारी होगा। पर वह इन्तजार कर रही थी। जानने को उत्सुक थी कि उसका कौन सा बेटा लड़ाई में मारा गया है।

अन्त में उसके शब्द बाहर आये "सभी पांचों"।

महिला का चेहरा फीका पड़ गया, उसकी ठोड़ी हिलने लगी, उसकी आंखें आंसुओं से भर गईं। तब उसने उसकी विचित्र भरोसे की आत्मा से कहा। वे सब उसके (प्रभु) के थे – उसने उन्हें अपने साथ रहने के लिये ले लिया" एक साथ वे प्रार्थना में घुटने पर हो गये।

वहाँ कोई उन्माद नहीं था, कोई बड़बड़ाहट नहीं, कोई कड़वाहट नहीं, कोई शिकायत नहीं। उसने अपने लड़कों को वाचा बांधने वाले परमेश्वर को सौंप दिया था। उस समय जब उन्हें देश की बुलाहट आई थी और उन्होंने घर छोड़ा था और वह भी अपने उद्धारकर्ता को जानती थी कि उसके प्रेम और बुद्धि के लिये प्रश्न करें। उसकी शान्ति थी जो समझ से बिल्कुल बाहर थी और उसकी गवाही उसके गांव में उन सब सन्देशों से जो उस वर्ष प्रचार किये गये अधिक मतलब रखती थी।

कहानी ये सुझाव नहीं देती कि सभी विश्वासी इसी तरह अपनी प्रतिक्रिया कर सकते जो इस मसीही विधवा ने किया। प्रभु ने स्पष्ट है उसके इस अत्याधिक हानि पर विशेष अनुग्रह दिया। किसी प्रिय जन की मृत्यु पर रोना ना शर्म है ना विफलता। यहाँ तक कि यीशु ने भी किया।

पर ये घटना दिखाती है कि मसीही कुचल जाने वाले दुःख में भी भिन्न हैं, इतने भिन्न कि संसार देखता है और आश्चर्य करता है। जब विश्वासी परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर सही भरोसा करते हैं तो उन्होंने संसाधन को छिपाया है जिसके विषय में दूसरे कुछ नहीं जानते।

पाँच

आज्ञाकारिता की कीमत

बड ब्रंके के लिये जीवन वायु थी। उसकी प्रेमी पत्नी थी जेनिस, छः बच्चे और हवाई जहाज के रख–रखाव में एलगिन इलीनोइस के छोटे हवाई अड्डे पर साथी था। संसार उसका सीप था, या सबसे कम, तो उसने ऐसा सोचा।

अन्त में, फिर भी उसकी शान्ति में परेशानी थी जब उसकी आत्मिक दशा का विचार उसे परेशान करने लगा। उस समय तक वह एक स्थानीय कलीसिया का एक विश्वासयोग्य डीकन था, पर इससे वह सन्तुष्ट नहीं था। मुख्य बात जो उसे उठानी थी वह बच्चों का बपतिस्मा था। वह इस विचार को अधिक स्वीकार नहीं कर सका कि एक छोटे बच्चे पर पानी का छिड़काव करने से बच्चा मसीह का सदस्य बन जाता और परमेश्वर के राज्य की मीरास पाता। पूरी श्रृंखलाओं की विचित्र परिस्थितियों के द्वारा वह शाम के बाइबल स्कूल की कक्षाओं में जाने लगा, सप्ताह गुजरते गये और उसकी आत्मा में हल्की भोर होने लगी और वह एक समर्पित मसीही बन गया जबकि वह सुसमाचार के प्रसार–प्रचार को देखता था।

प्रारम्भ से "बड" की बड़ी इच्छा थी कि परमेश्वर के वचन को जाने और उसकी आज्ञा का पालन करें। यदि उसने सोचा था कि जब उसका उद्धार हुआ तो अब आगे कोई समस्या नहीं होगी, पर वह गलत था। विशेष कर एक समस्या आ खड़ी हुई। अब वह ऐसे व्यक्ति के साथ साझे में था

जो विश्वासी नहीं था। इससे पहले कभी ये समस्या नहीं आई पर अब वह पढ़ता है:

> "अविश्वासियों के साथ असमान जुए में ना जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? और मूरतों के साथ परमेश्वर के मंदिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसूंगा और उनमें चला फिर करूंगा और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा और वे मेरे लोग होंगे। इसलिये प्रभु कहता है कि उनके बीच में से निकलो और अलग रहो और अशुद्ध वस्तु को ना छुओ तो मैं तुमको ग्रहण करूंगा। और तुम्हारा पिता हूंगा और तुम मेरे बेटे और बेटियां होंगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है" (2 कुरिन्थियों 6:14–18)।

जब भी हर समय बड जब वचन को पढ़ता तो वचन उसे घायल करता। "विश्वासी का अविश्वासी के साथ क्या सम्बन्ध"? ये सत्य था। वह और उसका साथी विभिन्न लहरों में थे। उनके मूल्यों में भिन्नता थी। अनैतिक व्यवहार पहले कभी समस्या नहीं थी, पर अब ये मूठ काफी बढ़ गया था। ऐसा लगता था कि जुए में एक तरफ बैल और दूसरी ओर गधा जुते हुए हैं – वे साथ खींच नहीं सकते।

'बड' जानता था कि उसे क्या करना है। उसे असमान जुएं से बाहर निकलना है। पर हवाई जहाज पर रख–रखाव का व्यापार उसकी रोजी–रोटी थी। उसे अपने परिवार के लिये सोचना था, उनके पास कोई भी दिखने वाला सहारा नहीं होगा यदि छोड़ दिया तो, वे कैसे जियेंगे?

प्रथम, उसने स्थानीय कलीसिया के प्राचीन से सम्पर्क करने का निश्चय किया। उसने प्राचीन को पूरी कहानी बताई कि वह किस प्रकार एक चट्टान और कठोर स्थान के बीच में था। प्राचीन ने कहा, "यहां बड़ी समस्या नहीं है, केवल अपने साथी को खरीद लो जिससे तुम पूरे व्यापार के मालिक होगे"।

"मेरे पास काफी पैसा ऐसा करने को नहीं है"।

"इस मामले में तुम क्यों उसे तुम्हें खरीदने को देते?"

ये उचित छानबीन थी, उसने साथी से बातचीत की और उसको आश्चर्य हुआ कि साथी इस सुझाव पर राजी हुआ। उसने बड को वायदा किया कि वह उसके हिस्से को 40,000 डॉलर इस व्यापार का देगा। तो समस्या का सही समाधान लगा। पैसा आना आरम्भ हो गया। मासिक चैक डॉलर 200 के थे। तब ये कीमत/देन अनियमित होने लगी। बाद में जब 'बड' ने चैक को भुनाया तो वे नोट के साथ वापस लौटा दिये गये कि "काफी पैसा नहीं है"।

ये कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि जब बड ने जाना कि उसके पूर्व साथी ने दिवालिया होने का केस दर्ज किया है।

'बड' का आज्ञा पालन करने का दृढ़ निश्चय, "अविश्वासियों के साथ असमान जुए में ना जुतो" को 38,000 से 40,000 डॉलर की कीमत चुकानी पड़ी। वो करे तो क्या करे? पर प्रभु ने अपनी प्रतिज्ञा नहीं भूली, "मैं तुम्हारे पिता समान हूंगा" (2 कुरिन्थियों 6:18)। अधिक समय नहीं गुजरा जब 'बड' एक मसीही के यहां कार्य करने गया, पद जो 25 वर्षों तक रहा। जब वह 65 की उम्र में पहुंचा और सेवा अवकाश प्राप्त किया तो उसने जो पैसा खोया था उसका तीन गुणा पाया, ये ऐसा था जैसे प्रभु है। वह किसी मनुष्य का कर्जदार नहीं है।

छः

टूटापन जो जीतता है[6]

डेविड एकमेन एक विशाल समाचार पत्रिकाओं का एक वरिष्ठ पत्रकार था, हांग–कांग में सेवा कर रहा था। उसकी ख्याति एक समर्पित मसीही की थी, एक जो प्रभु के लिये अपनी गवाही खुलेआम देता था।

ब्यूरो का मुखिया कभी कभी लगातार ऐकमेन से चिढता था, उसकी धर्मनिरपेक्ष शब्दावली के कारण। ये व्यक्ति मुश्किल से प्रभु का नाम लिये बिना बात कर सकता था। उसकी वार्तालाप शपथों से बंधी हुई होती हैं। ऐकमेन अपने क्रोध को शान्त करने का प्रयास करता पर अन्दर दबाव बढ़ता जाता।

अन्त में, सुरक्षा का वाल्व बोल उठा। एक दिन इस व्यक्ति का शपथ लेना असाधारण रूप से अपमानजनक था, ऐकमेन भौंक पड़ा, "क्षमा करें, मुझे पसन्द नहीं कि आप परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेते हैं"। उसने इसे धीरे से या कोमलता से नहीं कहा बल्कि ये कठोर डांट थी। ब्यूरो मुखिया ने इसे खामोशी से नहीं लिया। "मुझे क्षमा करें" उसने कहा, "जो तुमने अभी मुझ से जिस प्रकार कहा मुझे अच्छा नहीं लगा"।

पहले डेविड ने आत्म संतुष्टि को महसूस किया कि उसने इस मामले को अन्त में अध्यक्ष के पास लाया। उसने इसे बताकर सन्तुष्टि का अहसास किया। शायद ये समस्या का समाधान निकाले। उसे अधिक समय

तक लगातार सुनना नहीं पड़ेगा। उसने कठिन समस्या को निपटाया और अच्छा ही किया।

पर तब उसने अहसास किया कि उसने इसे "विस्फोट किया" था। जो उसने अपने बॉस से कहा था काफी सत्य था, पर जिस तरह से कहा वह गलत था। उसकी गवाही छितर गई थी उनके बीच का संवाद टूट गया था।

एक रात जब वह बिस्तर पर लेटा, उसने अहसास किया कि उसे एक मसीही होकर क्या करना था। उसने कहा, "मैं कल वहां जाऊंगा और सब का दोष ले लूंगा"। ये उसके गर्व की मृत्यु होगी। उसके लिये ये बहुत अवमानना/अपमान होगा। पर उसने कड़वी गोली को चलाया, और अगली सुबह वह ब्यूरो अध्यक्ष के सामने खड़ा हुआ।

मैं चाहता हूं कि आप दो चीज़ें जान लें और तब मैं चला जाऊंगा। पहला, हमारा सम्बन्ध टूट गया है, हम एक दूसरे से वार्ता नहीं कर रहे हैं और उसका कारण मैं हूं, मैं जिस प्रकार का व्यक्ति होना चाहिये था नहीं था, मैं सारा दोष अपने ऊपर लेता हूं और आप से क्षमा प्रार्थी हूं। इसमें आपका कुछ नहीं है। ये मैं हूं" अध्यक्ष आवाक् रह गया।

अब ये समय था कि दूसरे मील को जायें।

"नम्बर दो" ऐकमेन जारी रहा, "अब से हर कहानी पर मैं प्रथम स्थान देता हूं। यदि आप कोई कहानी करना चाहते हैं, ये आपका चुनाव है। यदि आप करना नहीं चाहते, तो मैं करूंगा, मुझे क्षमा करें। कहानियां सब आपकी पहले हैं और मैं बची हुई ले लूंगा।"

ऐसी क्षमायाचना और निःस्वार्थता पत्रकारिता के क्षेत्र में वास्तव में अनजानी हैं। ब्यूयो अध्यक्ष शब्दहीन था। ऐकमेन ऑफिस से चला गया, इस समय आनन्दित कि उसने पुनः सम्बन्ध जोड़ लिया।

कुछ दिनों के बाद, डेविड ने सुना एक मसीही व्यापारी के नाश्ते के विषय कि जिसमें एक उच्च अधिकारी मसीह में अपने विश्वास की गवाही देने वाला है। बल्कि अनिश्चितता से वह ब्यूरो अध्यक्ष के पास गया और कहा, "देखिये, मैं एक नाश्ते पर जा रहा हूं, जहां एक व्यापारी अपना

विश्वास परमेश्वर पर बताने वाला है, क्या आप जाना चाहेंगे?" इस बार ऐकमेन की आश्चर्यचकित होने की बारी थी। उसके बॉस ने कहा, "ठीक है"। मीटिंग के अन्त में उसने अपने जीवन को प्रभु यीशु को समर्पित किया और यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार किया।

ऐकमेन ने वर्णन किया, "वह अपने साथ बहुत सा सामान लेकर आया और अभी तक संघर्ष कर रहा है। पर यदि मैंने पहला कदम नहीं किया होता तो मैं इस व्यक्ति को कभी भी नहीं जीत पाता"।

एक पूर्ण बिना शर्त की क्षमा याचना ऐकमेन की तरह इस संसार के जंगल में बहुत कम वस्तु हैं। सभी अधिकारों का तिरस्कार करना प्रतिस्पर्धा की आर्थिक स्थिति में विदेशी है। फिर भी इस प्रकार का दूसरा संसारिक व्यवहार जो कठोर पुरुषों और महिलाओं को मसीही विश्वास में जीतते हैं।

सात

कोई सेवा निम्न नहीं होती[7]

परमेश्वर ने 'डग निकोलस' को भारत में सुसमाचार ले जाने के लिये बुलाया, इस पर कोई शंका नहीं थी। उस देश की आत्मिक आवश्यकता डगमगा रही थी। लाखों लोग झूठे धर्म की जकड़न में थे। डग सकारात्मक था, उसने अपने कांधे पर ईश्वरीय थपथपाहट महसूस की थी।

यदि ये सब सच था, तो वह अभी क्या कर रहा था, एक अस्पताल के टी.बी. वार्ड में गतिहीन था। जो उस समय का निम्न स्तर का अस्पताल था? ये आश्चर्य करना आसाध्य था कि क्यों इस बीमारी ने उसे दबोच लिया था। यदि वह स्वस्थ होता तो प्रभु के लिये बहुत कुछ कर सकता था।

शंका और मानसिक दबाव में डूब जाने के बदले, उसने वार्ड में सुसमाचार प्रचार करने का निर्णय किया। वह पलंग–पलंग पर गया और सुसमाचार पर्चे दिये। स्वीकृति अप्रत्याशित थी। दूसरे मरीज़ों ने विरोध किया। उन्होंने उसे एक धनी अमरीकन की तरह देखा, कि अस्पताल का एक पलंग घेरे हुए है जो एक भारतीय को दिया जा सकता था। उन्होंने रूखेपन से उसके सुसमाचार पर्चों को नकार दिया।

डग के लिये परमेश्वर के विभिन्न तरीके थे कि वह लोगों के पास सुसमाचार लेकर पहुंचे। एक रात जब एक मरीज़ बहुत कमजोर और बीमार था पलंग से मुश्किल से बिस्तर से उठ पाया। वह बाथरूम जाना

चाहता था पर वह इतना कमजोर था कि जा नहीं सकता था। उसने अपने आपको और फर्श को गन्दा कर दिया, और पूरा वार्ड बुरी बदबू से भर गया।

नर्सें और सहायक उस पर बरस पड़े, उसे श्राप देने लगे क्योंकि उन्हें सफाई करना था। एक ने तो उसे थप्पड़ मार दिया। इस पूरी घटना ने मरीजों को तड़पा दिया।

अगली रात वही दयनीय यातना सहने वाले ने फिर पलंग से उतर कर बाथरूम जाने का प्रयास किया, पर वह बहुत कमजोर था, वह बिस्तर पर गिर गया और रोने लगा।

अपनी कमजोरी के बावजूद डग वहां गया उस व्यक्ति को उठाया और बाथरूम तक ले गया, वह इन्तजार करता रहा जब तक उस व्यक्ति ने काम पूरा नहीं कर लिया और तब वापस उसे उसके पलंग पर ले गया।

उस समय तक सभी जाग गये थे और जो हुआ था सबने देखा था। उनका रवैया अमरीकन के प्रति बिल्कुल बदल गया था। एक मरीज़ डग के पलंग के पास आया और गर्म गर्म चाय पेश की, चलकर वह एक पर्चा चाहता था, डॉक्टर्स, नर्सेज़ और सफाई कर्मचारी महिलाओं ने सुसमाचार की पुस्तकें और यूहन्ना का सुसमाचार मांगा। निश्चय ही उनमें से कुछ मसीह के पास आ गये क्योंकि उन्होंने प्रभु को डग निकोलस के तरस भरे जीवन में देखा था।

यही प्रभु यीशु का मतलब था जब उसने कहा, "दया करना काफी नहीं हैं जो संसार के लोग करते हैं। हमें इससे ऊपर/आगे जाना है और मसीह को कार्य करते दिखाना है जो संसार के लिए विदेशी हैं? प्रेम का अलौकिक प्रगट करना यदि हमारा व्यवहार संसार के कार्यों से ऊपर नहीं उठता तो कभी भी उन पर असर नहीं डाल सकता जो नाश हो रहे हैं।

आठ

स्कॉटलैंड का पुत्र जिसने उसे गर्वित किया[8]

ऐरिक लिडिल को समझने के लिये आपको ये जानना है कि उसके दिनों में स्कॉटलैंड में मसीहियों ने प्रभु के दिन को आदर–सत्कार दिया। उन्होंने इसे मसीही सब्त कहा। उन्होंने कोई काम नहीं किया, किसी खेलकूद में अपने को नहीं लगाया पर विश्वासयोग्यता से कलीसिया की अराधना में शामिल हुए। स्टोर्स बन्द किये गये केवल आपात स्थिति में, यातायात की सुविधायें बन्द थीं। विश्वासियों ने एक दिन अलग रखा विशेष रूप से अराधना और प्रभु की सेवा के लिये। उन्होंने कारण दिया कि यदि आपने प्रभु से प्रेम किया तो आप उसके दिन से प्रेम करोगे।

ऐरिक ने जब वह 15 वर्ष का था अपने जीवन का महानतम निर्णय उसने किया। उसने मसीह यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। यहां तक कि जब वह दौड़ों में दौड़ने की धुन में था, प्रभु उसकी प्रथम प्राथमिकता थी।

उसकी अभिलाषा थी कि वह अपने देश का ऑलम्पिक में प्रति निधित्व करें और उसका सुअवसर 1924 में आया। जब उसका चुनाव 100 मीटर की दौड़ पेरिस में भाग लेने के लिये हुआ। वह बहुत उत्साही था पर वह बदल गया। जब उसके टीम के एक साथी ने उसे बताया कि ये दौड़ रविवार को होगी।

"ऐसा नहीं हो सकता" वह बुदबुदाया "ऐसा नहीं हो सकता"!

उसने एक शान्त स्थान खोजा और प्रार्थना में समय बिताया। जब वह उठा उसका दृढ़ निश्चय की नज़र थी। वह प्रभु को और उसके दिन को अनादर नहीं करेगा।

जब ये पता चला तब बड़ी बातें हुईं। "तुमने अपने देश को नीचा दिखाया है तुम एक विद्रोही हो" बरतानिया का मैनेजर चिल्ला उठा, "तुम ऐसा नहीं कर सकते"। उसने खामोशी से उत्तर दिया, "मैं प्रभु के दिन में नहीं दौड़ सकता हूं"।

उसके वापस नाम लेने की बड़ी खबर बनी। ब्रिटिश के खेल अधिकारी अत्याधिक नाराज़ थे। अखबार अपने तिरस्कृत में बहुत कठोर थे। उसके कुछ मित्र उसका बचाव कर रहे थे पर ये सब बेकार था। लोकप्रिय ऐरिक अब खेल खराब करने वाला था।

ऐरिक ने बुलेटिन बोर्ड का अध्ययन किया, उसने नोटिस किया कि 400 मीटर दौड़ रविवार को नहीं होगी। ये उसकी दूरी नहीं थी पर वह कोशिश कर सकता था। तो वह मैनेजर के पास गया और पूछा कि क्या वह उसमें दौड़ सकता है – नियम के विपरीत मैनेजर राजी हो गया। ऐरिक ने प्रथम चरण में जीत लिया। वह फिर दौड़ा और जीत गया। शीघ्र ही वह सेमीफाइनल में था तब फाइनल में जिसे ऑलम्पिक का सबसे उच्च घटना मानी गई।

दौड़ के पहले उसे कागज़ की एक पर्ची दी गई। ऐरिक ने पढ़ा, "पुरानी पुस्तक में ये कहता है, "जो मुझे सम्मान देता मैं उसे सम्मान देता हूं" आपको हमेशा सफलता मुबारक हो, "इस संदर्भ का बाइबल का संदर्भ 1 शमूएल 2:30, (के.जे.वी) पद उसके साथ पूरी दौड़ में दौड़ी।

एक अधिकारी जिसने ब्रिटिश टीम को छोटा संदेश दिया – उसने कहा, "खेल को खेलना केवल वो चीज़ है जीवन में वह मतलब रखता है, "शायद ये निन्दनीय उद्देश्य ऐरिक के प्रति था पर तीर जमीन पर गिर पड़ा। ऐरिक के लिये दूसरी चीज़ें थीं जिसका मतलब अधिक था।

जब दौड़ने वालों को लाइन में स्थान लेने के लिये खींचे गये। ऐरिक एक बुरा था। इसके अतिरिक्त उस दिन का तापमान सहनेयोग्य नहीं था। ये ओलम्पिक के लिये लाजवाब था।

लोगों ने कहा कि ऐरिक की दौड़ने की शैली भयानक थी। उसकी बाहें तैरती हैं इसकी मुट्ठी हवा को पीटती हैं, उसके घुटने पंम्प करते हैं और उसका सिर पीछे फैंका जाता है। किसी ने उसकी तुलना हवा चक्की से की। पर जब वह लक्ष्य से 50 मीटर दूर था। उसने अत्याधिक प्रयास अपनी गति को तेज करने के लिये की। वह दूसरे धावकों से थोड़ा दूर कर दिया गया, उसने स्वर्ण पदक जीता और उसने विश्व का एक नया रिकॉर्ड बनाया।

उसके एक जीवनी लिखने वाले ने लिखाः "उसने लाखों की कल्पनाओं को कैद कर लिया, उसने अपने 100 मीटर की दौड़ में जहां वह विश्वास योग्य था, सब कुछ पर जीतने की सहमति दी। 100 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त करने का अवसर खो दिया। क्योंकि उसके मसीही विश्वास के जीवन में सिद्धान्तों को अधिक महत्व दिया।

"जब उसने बदले में 400 मीटर की दौड़ अक्समात् जीत गया तो देश उसके पैरों तले था"।[9] एक प्रसिद्ध खिलाड़ी ने कहा, "बिना हल्के से शक के ऐरिक महानतम धावक था जिसे स्कॉटलैंड ने कभी उत्पन्न किया। उसके प्रभाव से, उदाहरण और उसकी योग्यताओं द्वारा देश गर्वित हो गया।

बाद में वह चीन में मिशनरी बन गया, जहाज पर चढ़ने के पहले उसने अपनी बहन से कहा, "जैसी, परमेश्वर ने मुझे किसी अभिप्राय के लिये बनाया है? चीन के लिये, पर उसने मुझे तेज बनाया है, और जब मैं दौड़ता हूं उसकी प्रसन्नता महसूस करता हूं"।

जब जापानियों ने चीन पर कब्जा कर लिया, ऐरिक को एक नजरबन्दी – कैम्प में भेज दिया गया था। हालात वहां के कठोर थे, भोजन और वस्त्र की कमी थी और शौचालय की सुविधा का तो बयान नहीं किया जा सकता था। कैम्प में लोगों का बुरा हाल था। कई बन्दियों में आपस में झगड़ा था विशेषकर अमरीकन व्यापारियों में।

पर उनमें एक सहमति थी कि ऐरिक भिन्न था, वह अपनी मसीहत में जिया। उसकी तस्वीर मसीह की तरह कैम्प में देखी गई जितना कि

वह चीनियों के बीच सियाचेंग में था। उसने वैश्याओं से मित्रता की और गिरे – तुच्छ व्यापारियों से भी, वह कमजोरों के लिये कोयला ढोता और जवानों को सिखाता था। वह अपनी सोने की घड़ी बेचने को तैयार था और हॉकी स्टिक के लिये अपनी चादर को फाड़ता था। और अभी भी वह वही ऐरिक था, रंगबिरंगी कमीज में आस–पास चलता था। जो पुराने पर्दों की बनाई गई थी और पूरी तौर से साधारण दिखता था और कुछ विशेष नहीं था।[10]

नज़रबन्दियों में से एक रूसी वैश्या को कुछ अल्पप्रवण की आवश्यकता थी। जब ऐरिक ने इसकी देखभाल की उसके लिये, उसने कहा ये पहला व्यक्ति है जिसने बिना दाम या बलात्कार के उसके (स्त्री) के लिये कार्य किया।

एक बन्दी ने उसके लिये कहा, "मैंने ऐरिक को कभी किसी के लिये बुरा कहते नहीं सुना," दूसरे ने गवाही दी "ऐरिक अधिक मसीह की तरह व्यक्ति था जिसे मैंने जाना"।

जब एक जापानी सिपाही ने नोट किया कि एक दिन ऐरिक हाज़री के समय उपस्थित नहीं था, किसी ने बताया कि कुछ घन्टे पहले वह मर गया। सिपाही हिचकिचाया और कहा, "लिडिल एक मसीही था, क्यों था ना?" उसने ऐरिक से कभी बात नहीं की थी। पर उसने उसमें मसीह को देखा होगा।

वह वहां मर गया, बरबंता के परिणाम में नहीं, पर एक दिमाग में ट्यूमर के कारण। कैम्प क्लीनिक इस प्रकार के बीमारों को सम्भालने में सक्षम नहीं थी। ऐरिक के अन्तिम बोल जो "ऐनी बूचन" से बोले गये जो एक स्कॉटिश नर्स थी। वो ये थे "ये पूर्ण समर्पण है"।

जब समाचार ग्लासगो पहुंचा, संध्या के समाचार ने घोषित किया, "स्कॉटलैंड ने एक पुत्र खोया जिसने उसे हर घन्टे अपने जीवन से गर्वित किया"।

जीवन की अन्तिम यात्रा के समय आरनोल्ड ब्राइसन ने जो सीनियर मिशनरी था, कहा :

"बीते हुए कल एक व्यक्ति ने मुझ से कहा, "सब पुरुषों को जिन्हें मैं जानता हूं ऐरिक लिडिल वह था जिसका चरित्र और जीवन में यीशु का आत्मा पहले ही से प्रगट किया गया था"। और हम सब जिन्हें उसे जानने का सौभाग्य मिला कोई भी करीबी से वो इस न्याय को गुंजाती हैं। उसके अतिविषक्त जीवन का रहस्य क्या था और दूर तक पहुंचने वाला प्रभाव? परमेश्वर की इच्छा में सम्पूर्ण समर्पण जैसा मसीह यीशु में प्रगट किया गया। उसका परमेश्वर द्वारा नियंत्रित जीवन था और उसने अपने स्वामी और प्रभु का अनुसरण किया अपनी पूरी भक्ति के साथ जिसने कभी भी नहीं फहराया और अभिप्राय की अधिकता जो मनुष्य को दोनों वास्तविकता और सच्चे धर्म की सामर्थ दिखाती है।[11]

कहानी का बाद का वर्णन है। 1977 में ब्रिटिश फिल्म डायरेक्टर "डेविड पुटनाम" को ऐरिक लिडिल की 1924 ओलम्पिक की विजय की जानकारी मिली। पुटनाम ने एकदम एक फिल्म बनाई जो "मध्य रात्रि एक्सप्रेस" कहलाई, जिसने मानव के सबसे खराब व्यवहार को दिखाया गया था। ये "कटुस्वाभाव" की फिल्म थी जिसने उसके मुंह में इक्ट्ठा स्वाद दिया। वास्तव में वह निराश था कि ये बॉक्स ऑफिस में इतनी विजयी थी। अब वह महसूस करता है कि ऐरिक की कहानी "भावों से पूर्ण" सेवा में लाई जाना चाहिये। उसने कहा, "यहां एक चरित्र है जो कुछ स्वयं की अपेक्षा बड़े के लिये खड़ा होता है। संसार की सफलता के सामने परमेश्वर की डयूटी को रखता है।

वो अभी फिल्म अग्निमय रथ की तरह आई है। ये एकदम हिट हुई है। पूरे संसार ने एक जवान के बारे में सुना जिसकी धर्मनिष्ठा ओलम्पिक के स्वर्णपदक से अधिक अर्थ रखता है। एक नम्र स्कॉटिश धावक जिसके दृढ़ संकल्प था और वह समझौता नहीं करेगा।

फिल्म को चहुंओर प्रशंसा मिली। लोग देखकर रोये जब उन्होंने परमेश्वर को एक व्यक्ति को सम्मान देते देखा जिसने परमेश्वर को सम्मान दिया। न्यूयार्क के फिल्म आलोचक रेक्स रीड इसे कहते हैं, "कि ये सबसे उत्तम फिल्म आज तक बनाई गई। ये सम्पूर्ण विश्व के लिये सत्य

की गहराई में पहुंचती है और भावनाओं का वर्णन करती है जो आज के निन्दक स्तर द्वारा पुराने फैशन की समझी जाती है"।

ऐरिक 1924 की मशहूर दौड़ में दौड़ा – 57 वर्ष बाद फिल्म बाहर आई जिसने उसे इस प्रकार सम्मान दिया जो वह कल्पना में भी नहीं सोच सकता था।

नौ

जनरल जिसने अपने आप को नम्र किया[12]

गृह युद्ध समाप्त हो गया था और वाशिंगटन में महान विजय को मनाने की तैयारी की जा रही थी, जनरल विलियम टेकुमशेह शेरमेन इस योजना का प्रभारी (इंचार्ज) था। परेड का रास्ता पेनसिलवेनिया ऐवेन्यू और व्हाइट हाउस से होकर जायेगा। पूर्व लेख ने आदेश दिया कि जनरल अपने डिवीज़न के सामने जिसका उसने नेतृत्व किया सामने सवारी करेगा।

परेड की सुबह एक असमंजस पैदा हो गई, जनरल शेरमेन परेशान नज़र आ रहे थे। जब वे जनरल ऑलीवर.ओ.होवर्ड के पास पहुंचे। इस जनरल की सेना ने विजय दिलाने में बहुत सहायता अटलान्टा और टेनेसी अभियान में किया था। टेनेसी की सेना की अध्यक्षता करने को पदोन्नति की गई थी उसने शेरमेन की प्रसिद्ध "मार्च टू द सी" में हिस्सा लिया था।

"जनरल हावर्ड, आप जानते हैं कि आपको अपने डिवीजन के सामने सवारी करनी है"।

"यस सर"!

"ठीक है, मैं आप से एक समर्थन चाहता हूं"।

"आपकी आज्ञा हो "सर" "।

"जनरल —— आपको किसने आगे बढ़ने की आज्ञा दी जो चाहता कि आप उसके पुराने डिवीजन के सामने सवारी करें। मैं जानता हूं कि

पिछले अभियान में आप ही प्रभारी थे। पर हावर्ड, मैं जानता हूं कि आप एक मसीही हैं और इसलिये निराश हो सकते हो क्या आप नीचे उतर जाओगे और जनरल —— को परेड में अगुवाई करने दोगे"।

जनरल हावर्ड क्षण भर के लिये स्तब्ध रह गये। उसने आगे टुकड़ी की अगुवाई करने को देखा। जिन्होंने विश्वासयोग्यता से और त्यागपूर्ण उसकी सेवा की थी। एक अद्‌भुत टुकड़ी में संघ भावना विकसित हो गई जैसा वे साथ जिये और लड़े। वे पुरुष उसके लिये मर सकते थे और एक दूसरे के लिये। उसने सेवा में एक बांह खो दी थी। अब उसे कहा जा रहा है कि अपने सम्मान के स्थान को दूसरे अफसर के लिये त्याग दे जो अनचाही, अन्यायपूर्ण मांग रख रहा था।

पर जनरल हावर्ड ने शीघ्र ही अपने को सम्भाला। सेना के कथन में सत्य होना। "आपकी विनती मेरे लिये आज्ञा है"। वह उतर कर अपने आज्ञा देने वाले अधिकारी के सामने खड़ा हुआ और कहा, "ठीक है सर" जबकि आपने इस प्रकार रखा है और जबकि मैं मसीही हूं मैं इसे खुशी से करूंगा। जनरल ——— डिवीजन के सामने सवारी कर सकते हैं"।

शेरमेन ने उसकी ओर देखकर राहत की सांस ली और प्रशंसा से कहा, "हावर्ड, मैं आशा करता था कि आप इसे करने को राजी होगे। अब मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ पूरी सेना के सामने सवारी करें"।

मानव व्यवहार के विपरीत जनरल हावर्ड ने मसीही कार्य किया। उसने सीखा था मुश्किल से जो मानवता आती है वह मसीह के मन को लेने पर आती है। निचला स्थान लेना स्वाभाव के दाने के विरुद्ध है। पर शेरमेन ने इस प्रकार उसे सम्मानित किया वो कभी भी ऐसा नहीं हो सकता था।

दस

रोग में और स्वास्थ में[13]

रोबर्टसन मैकक्विलकेन कोलम्बिया सेमीनरी और बाइबल कॉलेज का प्रेसीडेंट था। उसके जीवन का महान आनन्द ये था कि जवानों को प्रशिक्षित कर प्रभु मसीह यीशु के प्रभावशाली सेवक बन जाना। इस उद्देश्य के लिये उसने बहुत मेहनत की। उसकी अगुवाई के आधीन कॉलेज की प्रतिष्ठा आत्मिक और शिक्षण में सर्वोच्च थी।

तब लगा कि पेंदा सब चीज़ में बाहर गिर गया। ये उस समय आरम्भ हुआ जब उसकी पत्नी म्यूरियल ने उसी कहानी को फिर बताना आरम्भ किया। तब उसने अपने पढ़ने की योग्यता खो दी और उसकी कला के कौशल/उसे अपनी सभी समाज की सेवा रोकनी पड़ी। ये रॉबर्टसन को बड़ी पीड़ादायक था। ये देखना कि धीरे धीरे वह धुंधली होती जा रही थी। अन्त में जब एक डॉक्टर ने उससे चार सुसमाचारों के नाम लेने को कहा और वह नहीं ले सकी, तो बीमारी का निदान पक्का था। उसे अल्जहेमेर की बीमारी थी।

वह राबर्टसन की बहुत वर्षों तक भक्त साथिन रही थी। उसके बिना वह सेवकाई को नहीं चला सकता था जो अत्यन्त फलदायक थी। वह क्या करें? क्या वह देखभाल करने वाले को रखें कि उसकी देखभाल करें जिससे वह अपना कार्य कॉलेज और सेमीनरी में कर सके? या वह उसकी

देखभाल करने के लिये त्यागपत्र दे दे जो वह लम्बे अरसे से उसे सुख दे सके?

उनके सहयोगियों का निर्णय स्पष्ट है। बहुत से मित्र थे जो उसके लिये रिक्त स्थान पर खड़े हुए जो म्यूरियल के प्रति मसीही प्रेम और कोमलता बरसाते हैं। जो उसे कोलम्बिया में अपनी अगुवाई जारी रख सके।

पर क्या उसने वायदा नहीं किया कि वह अपनी पत्नी के साथ स्वास्थ, बीमारी में साथ रहेगा। जब तक कि मृत्यु उन्हें अलग ना करें? अभी वह बीमारी में थी और ये असाध्य है। सही है यद्यपि परमेश्वर आश्चर्यकर्म म्यूरियल में कर सकता है, पर यदि नहीं, वह एक राबर्टसन का कर सकता है। तो वह क्या करें? क्या वह अपनी शपथ को बरकरार रखे?

हां! उसे अपनी शपथ रखनी चाहिये। मसीही समुदाय की भयाकुलता के कारण उसने कॉलेज और सेमीनरी के प्रेसीडेन्ट के पद से त्यागपत्र दे दिया कि म्यूरियल की सेवा कर सके उसकी मानसिक और शारीरिक गिरती हुई दशा में। "जब समय आया तो निर्णय दृढ़ था। इसे बड़ी गिनती नहीं करनी पड़ी। ये प्रतिष्ठा का मामला था। ये छोटा कर्त्तव्य नहीं था कि मैंने सुख–दुःख होकर त्याग पत्र दिया, फिर भी उसने 4 दशक तक मेरी देखभाल अद्भुत भक्ति के साथ की, अब ये मेरी बारी थी। ऐसी साथी थी वह। यदि मैंने उसकी देखभाल 40 वर्ष तक की होती तो मैं उसके कर्ज़ से कभी बाहर ना होता"।

सतरह वर्षों तक राबर्टसन म्यूरियल के साथ उसकी उपेक्षित यात्रा में साथ चलता रहा। उसने लिखा :–

> ये मध्यरात्रि है, कम से कम उसके लिये और कभी कभी मुझे आश्चर्य होता है कि जब पौ फटेगी। यहां तक कि ये घातक अलहेज़मेर बीमारी उसे शीघ्रता से हमला नहीं कर सकती ना इतने लम्बे समय तक दुःख दे सकती। फिर भी उसके खामोश संसार में म्यूरियल बहुत सतुष्ट, अधिक प्रिय थी। यदि यीशु ने उसे घर बुला लिया है, मैं उसकी सौम्य उपस्थिति को कितना महसूस

करूंगा। हां! ऐसा समय भी है जब मैं झुंझला जाता, पर अवसर नहीं, ये क्रोधित होने का कोई मायने नहीं रखता और इसके अलावा शायद प्रभु मेरी जवानी की प्रार्थना का उत्तर दे रहा है कि मैं अपनी आत्मा को प्रसन्नचित करता।

एक बार यद्यपि मैंने उसे लगभग खो दिया था। उन दिनों में जब म्यूरियल अभी भी खड़ी हो सकती और चल सकती थी हमने डायर पर आश्रय नहीं किया। कभी कभी "दुर्घटनाएं" थीं। मैं उसके बगल में अपने घुटनों पर था, सब गन्दगी को साफ करने के प्रयास में जैसा वह शौचालय में व्याकुल खड़ी होती। ये आसान होता कि यदि वह मदद के लिये आग्रह ना करती। मैं अधिक अधिक परेशान था। अचानक उसे स्थिर खड़ा करने, मैंने उसकी पिंडलियों पर चांटे मारे कि शायद कुछ अच्छा हो। ये भारी चांटे नहीं थे। पर वह चौंक जाती। मैं भी! अपने विवाहित जीवन के 40 वर्षों में कभी मैंने उसे क्रोध में नहीं छुआ या किसी प्रकार बुरा–भला कहा, कभी नहीं, कभी कोशिश भी नहीं की, पर अब जब उसे मेरी सख्त जरूरत है–।

सिसकते हुए, मैंने उससे बिनती की कि मुझे क्षमा करें, भले ही वह शब्दों को बेहतर नहीं समझती इसकी अपेक्षा कि बोल सकती। तो मैं प्रभु की ओर मुड़ा उसे ये बताने कि मैं कितना दुःखी था। इस पर विजय पाने में मुझे कई दिन लग गये। हो सकता है परमेश्वर ने उन आंसुओं को कुप्पी में भर लिया है कि किसी दिन जब अग्नि जल उठे उसे वह उनसे बुझा सके।

तो रार्बट मैकक्विलकेन ने बाइबल कॉलेज और सेमिनरी के प्रेसीडेन्ट के पद को जिसे उसने 25 वर्षों से रखा उसे त्याग दिया इसलिये कि वह अपनी पत्नी की देखभाल कर सके इसलिये कि वह विस्मृति में उतर गयी थी।

आज ये कहानी मसीहत में प्रकाशित की जाती है, एक मसीही पत्रिका में। पाठकों ने बिना शर्म अपने आंसुओं से संघर्ष किया। इसने कुछ जोड़ों को जिन्होंने प्रभु को जाना अपने विवाह के प्रण (शपथ) को पुनः नया किया। दूसरों ने विवाह की पवित्रता के सम्बन्ध को नई प्रशंसा दी। अभी भी दूसरों ने अहसास किया कि उन्होंने मसीह यीशु को रॉबर्ट मैकक्विलकेन के जीवन में देखा।

ग्यारह

मेरा कप्तान

एक पब्लिक स्कूल टीचर मेलरोज़ मेसाचुसेट ने अपने शिष्यों को कार्य दिया कि विलियम अर्नेस्ट हेनली की कविता को स्मरण करें और कक्षा में दुहरायें। सामान्य रूप से इस कविता को अंग्रेजी साहित्य में उत्कृष्ट माना जाता है और उसने सोचा कि उसके विद्यार्थी इससे परिचित भी हो जायेंगे। ये ना सोचने वालों को अपनी आत्मा की शक्ति, स्वतंत्रता और वीरता से प्रेरित करती है इस कविता का शीर्षक लेटिन भाषा में "अजेय" रखा गया है।

वास्तव में, ये इनविक्टस (Invictus) कविता पूरी तौर से नास्तिक है। ये परमेश्वर के अस्तित्व पर प्रश्न उठाती और उसका उपहास करती है कि क्या उसका अस्तित्व है? लेखन अपनी स्वयं की क्षमता पर डींग मारता है। उसे अपने भविष्य का निश्चय करने के लिये ईश्वर की आवश्यकता नहीं है या उसे बताने में कि क्या करना है। वह सर्वशक्तिमान का विरोध करता है। यहां ये कविता है:–

इनविक्टस (Invictus) कविता

रात्रि के बाहर जो मुझे ढांपता है,
खम्बे से खम्बे तक काला है
जैसा भी ईश्वर हैं उन्हें धन्यवाद है
मेरे अविजय आत्मा के लिये।

परिस्थितियों के शिकन्जे
में ना झिझका ना चिल्लाया
मैं अवसर की लाठी के नीचे
खून से भरा सिर मेरा पर अनझुका।

क्रोध, आंसुओं के स्थान से ऊपर
धुंधला पर छाया का आतंक
फिर भी वर्षों का जोखिम
पाता, मुझे पाता निडर;

होता कुछ नहीं कैसा सीधा द्वार है
कैसे सजा के आरोप सूचि में है
भविष्य का अपने स्वयं स्वामी हूं,
अपनी आत्मा का मैं कप्तान हूं।

इन शब्दों से इडिथ वैल एक मसीही लड़की जो कक्षा में है उसे समस्या है। इस कविता को लोगों के सामने दुहराना/उच्चारण करना, जो विश्वास उसने किया वह उसका इन्कार होगा। ये एक को अपमानित करना होगा। जिसे उसने अपना कप्तान और स्वामी स्वीकार किया है।

वास्तव में, उसने ये महसूस किया कि ये उसके प्रभु उद्धारकर्ता की निन्दा होगी।

केवल एक कार्य करना था। वह टीचर के पास गई और शिष्टता से उसे अपनी परिस्थिति बयान की। वह ना तो लड़ाकू है ना ही अनादर करने वाली है। टीचर उसके साथ कारण पता करती है। उसने बयान किया कि इडिथ को कविता की भावना से सहमत होने की जरूरत नहीं है, पर उसे जानना चाहिये कि ये महान साहित्य का टुकड़ा है। ये व्यर्थ है। ईडिथ ने रेत में एक रेखा खींच दी। उसकी दृढ़ धारणा के साथ समझौता नहीं किया जा सकता।

टीचर ने महसूस किया कि यहां एक वास्तविक अनाज्ञाकारिता का

मामला है उसने इडिथ की रिपोर्ट स्कूल के प्रबन्धन से किया, पर ये यहीं ना रूका। किसी ने स्थानीय अखबार को रिपोर्ट किया और शीघ्र ही ये ब्रेकिंग न्यूज का कारण था। ये प्रथम पृष्ठ पर दिखाया गया। एक विद्यार्थी जिसने जानबूझ कर अपनी टीचर की आज्ञा मानने से इंकार किया। ईडिथ की तुलना यहोवा–विटनेस से की गई जो झन्डे के नीचे शपथ लेने से इन्कार करते हैं। ये स्पष्ट है कि वह एक विद्रोही और सम्भव है अमरीकन विरोधी झूठे प्रचार की एक सदस्य हो। उस क्षेत्र के पूरे मसीहियों ने ईडिथ के लिये ईमानदारी से प्रार्थना की।

तब एक विश्वासी उसके बचाव के लिये एक बुद्धिमानी के सुझाव के साथ आया। उसने उसे बताया कि एक मसीही अनुवाद हेनली की कविता का डोरथी डे के द्वारा किया गया है। शायद टीचर उसे दुहराने या उच्चारण करने की अनुमति देगी–विरोधी स्थान में और ऐसा ही हुआ। ईडिथ ने मसीही अनुवाद को किया और इसे अपनी टीचर को दिखाया। उसके आश्चर्य का ठिकाना ना रहा जब टीचर सहमत हो गई।

ईडिथ कक्षा के सामने खड़ी हुई और कविता का उच्चारण/दुहरायाः

मेरा कप्तान

ज्योति में से जो चकाचौंध करती मुझे
इस छोर से उस छोर तक सूर्य की नाईं उज्जवल
करता धन्यवाद परमेश्वर का जानता जो वो है
खीष्ट जो मेरी आत्मा का जीतने वाला है।

जबकि उसकी परिस्थितियों का झूलना
ना मैं कांपूंगा ना मैं चिल्लाऊंगा
नियम के आधीन कहलाता अवसर वो
आनन्द से सिर मेरा झुकता नम्रता से।

आंसुओं और पाप के स्थान से पार
साथ उसके जीवन! और मदद उसकी
जो, मनमुटाव, वर्षों के जोखिम
रखता, रखेगा भयरहित मुझे।

भय नहीं मुझे द्वार सीधा है यदि
किया उसने सूचि से सजा साफ
हे मेरे भविष्य का मसीह स्वामी
मेरी आत्मा का कप्तान है मसीह।

परमेश्वर ने मानव क्रोध को उस की प्रशंसा के लिये बनाया। उसने एक साहसी जवान विश्वासी को निर्दोष ठहराया जो मसीह विश्वास योग्यता लिये मौखिक निन्दा सहने को तैयार था, उसने बहुत से लोगों को मसीह के आमने सामने अनिवार्य रूप से ले आया।

ये यीशु के सत्य के लिये रीढ़ की हड्डी बन जाती है जब समस्त संसार विरोध में होता है। ईडिथ वेल उनमें से एक थी जिसने उसे लिया।

बारह

सामाजिक बहिस्कृत का मित्र

जैक वर्टजेन, वर्ड ऑफ लाइफ कैम्प का डायरेक्टर वा संस्थापक थून लेक, न्यूयार्क में था। ग्रीष्म काल के महिने बाइबल–कॉनफ्रेंस, यूथ कैम्प और दूसरी गतिविधियों के कारण भीड़ भाड़ वाले थे और ये खोये हुओं की मसीह के लिये जीतने के अभिप्राय से आयोजित किये जाते थे, विश्वासियों को विश्वास में बनाने और स्थानीय मंडलियों को समर्थ करने में किये जाते थे। जैक आत्मिक अगुवा था और मानव डायनमो था। उसके दिन प्रबन्धन की जिम्मेवारियों, सन्देशों की तैयारी मेहमानों के साथ भेंट और सभी कार्य जिससे कैम्प सुचारू रूप से चले। इन सब में व्यस्त दिन गुजरते थे।

एक वर्ष एक मसीही अपनी अप्रसन्न अपंगता के साथ व्यस्कों की सभा में आया। जब वह भोजन कक्ष में था उसे देखा जा सकता था। इससे पहले कि भोजन आरम्भ हुआ किसी को समाचार पत्र लेना था अपनी ठुड्डी पर चिपकाकर और अपनी छाती को ढांप कर और गोद में रखकर। आप देखिये जब उसने भोजन अपने मुंह में डाला तो वह उसका थोड़ा सा हिस्सा निगल पाया। क्योंकि उसके मुंह की मांसपेशी कमजोर थीं, बाकी का भोजन बाहर समाचार पत्र में गिर गया। उसके लिये वह कुछ नहीं कर सकता था। ये उसकी कई अपंगता का एक हिस्सा था। फिर भी दयनीय

सन्त परमेश्वर के वचन का स्वाद लेने कॉनफ्रेंस में जाना चाहता था जहां वह वचन सुन सके।

दूसरे मेहमानों ने उसकी मेज पर बैठना पसन्द नहीं किया। स्पष्ट है कि ये आराम से खाने के लिये प्रेरक/सहायक नहीं बनाई जा सकती थी। कुछ तो नकारते, दूसरों की भूख खत्म हो जाती। परिणाम स्वरूप ये परमेश्वर का मूल्यवान बच्चा स्थिर रूप से टेबल पर अकेला ही बैठा।

उसके अत्याधिक कार्यों के भार से जैक मुश्किल से समय पर भोजन कक्ष में आता था। साधारणतः सभी मेहमान खाना आरम्भ कर चुके होते और जगह जोशपूर्ण चर्चा से भर जाता।

जब मेहमानों ने अन्त में उसे आता देखा तो उत्साहित होकर उसे हाथ हिलाकर अभिनन्दन किया और उसे अपनी मेज पर भोजन करने बुलाया।

पर जैक नहीं गया। वह उस मेज पर गया जहां तिरस्कृत भाई अकेला खा रहा था। ऐसा ही प्रभु यीशु ने किया होता। जैक ने अपना सबसे अच्छा सन्देश प्रचार किया। खामोशी से उसने दूसरों को स्मरण दिलाया कि उद्धारकर्ता सबसे छोटों पर कृपा करता है, अन्तिम और सबसे निम्न, तुच्छों को और हमको भी निम्न स्तर के लोगों पर कृपालु होने के लिये बुलाया गया है। हमें सिर्फ अच्छे, महत्वपूर्ण लोगों पर ही कृपालु नहीं होना है (रोमियों 12:16), पर तुच्छ, निम्न लोगों के साथ मिलना है।

लोगों ने इसे पद/प्रतिष्ठा के स्तर पर गिना है जब जैक उस मेज पर बैठा था फिर भी वह रेडियो पर प्रतिष्ठित व्यक्ति था, एक जाना माना सुसमाचार प्रचारक और वर्ड ऑफ लाइफ का डायरेक्टर एक बढ़ती हुई मसीही संस्था का। इसका कुछ अर्थ था कि घर जाकर मित्रों को बताना कि वे जैक विर्टजेन को जानते हैं। पर इसलिये कि जैक एक नम्र विश्वासी था जो मसीह को जिया, पद/स्थान और विशेष सौभाग्य और उस निम्न तुच्छ व्यक्ति के पास भोजन कक्ष में पहुंचा।

तेरह

दया से घृणा की क्षतिपूर्ति करना[14]

आप क्यूबास नाम को ये सोचेंगे कि शायद ये क्यूबा से था। पर वह नहीं था। ऑस्कर क्यूबास होन्डरन था, प्रभु की सेवा निकारागुआ में सीमा पर कर रहा था। वही पहला व्यक्ति होन्डरनों में से था। जो पूरे समय की प्रभु की सेवा में था। ये अच्छी सिफारिश/प्रशंसा थी। प्रभु ने उसे नये नियम की मंडली तौक्विल गांव में स्थापित करने के लिये इस्तेमाल किया।

ऑस्कर स्कूल नहीं गया था, केवल अच्छा मसीही था। उसकी सबसे महान सम्पति/धन ये था कि उसका बड़ा विश्वास परमेश्वर के वचन में था और दूसरों के साथ वचन बांटने की गहरी अभिलाषा थी। इसके अतिरिक्त, उसने जो बाइबल से सीखा उसका अभ्यास करना सीखा, और इसका मतलब ये है कि वह नम्र, धीरजवन्त, प्रेमी और कृपालु था।

गांव तौक्विल कम्यूनिस्टों का घोंसला था। लोगों की सहानुभूति और विश्वासयोग्यता सेन्डीनिस्तास के साथ थी। पर जैसे अधिक अधिक लोग मसीह के पास आये और कलीसिया बढ़ती गई तो लोगों पर कम्यूनिस्ट की पकड़ कमजोर होती गई। ये इसलिये नहीं था कि लोग राजनीति में शामिल थे, ऐसा नहीं है। ये इसलिये था क्योंकि वे नमक और ज्योति थे कि उनके सकारात्मक नैतिक और आत्मिक प्रभाव न असर डालना आरम्भ कर दिया था।

समय में ऑस्कर ने एक समस्या का सामना किया? उस प्रकार की प्रशंसा जो प्रभु के सच्चे सेवक की करते हैं। जैसे जैसे काम बढ़ा कलीसिया को एक इमारत की आवश्यकता पड़ी। उस समय तक सन्त लोग घरों में मिला करते थे पर ये आगे को सम्भव ना हो सका। विश्वासियों के घर बहुत छोटे थे। तो मण्डली ने एक सम्पत्ति का टुकड़ा खरीदा, जिसके आधे में अराधना होगी और बाकी आधा हिस्सा ऑस्कर और परिवार के लिये था।

एक समय में मसीहियों ने ये अहसास नहीं किया था कि उनकी सम्पत्ति गांव के कम्यूनिष्ट नेता सेनटोस की जमीन से लगी हुई थी। ये सुसमाचार प्रचारकों का मित्र नहीं था। कोई शंका नहीं कि उसने विरोध किया क्योंकि कम्यूनिस्टवाद ने अपनी कुछ शक्ति खो दी थी तौक्विल गांव में। तो वह ऑस्कर को धमकाने लगा। एक बार तो वह किसी विचित्र दोष में जेल भेजने में सफल हो गया कि उसने एक सूखे पेड़ को काट दिया था। जब अधिकारियों ने जांच पड़ताल की और अहसास किया कि दोष कितना बेतुका था, उन्होंने ऑस्कर को छोड़ दिया।

क्या ऑस्कर ने विरोध करने का प्रयास किया? क्या उसने पड़ोसियों का तिरस्कार किया? क्या उसने अपने आप को बचाव करने का प्रयास किया? नहीं, सभी गलत व्यवहार जो उन्होंने झेला, वह मसीह की तरह था। उसने गांव वालों को आश्चर्य में डाल दिया। अपने इस संसार से बाहर के व्यवहार द्वारा। गांव तौक्विल के लोग इस प्रकार के नहीं थे।

जब चौपाल समाप्त हो गया, ऑस्कर ने अपना घर बनाना आरम्भ किया। ये सेनटोस के बाड़े के उस पार था। उस घर का किचिन सबसे सेनटोस के पास का था। अहा! इसने अप्रसन्न पड़ोसियों को उसका सबसे खराब करने का मौका दिया। उसने बाहर एक शौचालय बनाया। बाड़े के बिल्कुल किनारे, जो क्यूबा की किचिन में बदबू फैला देगा किसी भी भोजन को खराब करने के लिये काफी है।

ऑस्कर ने कहा कुछ नहीं, उसने हमेशा सेनटोस को मित्रता और आदर से अभिनन्दन किया। इसमें जाने का कोई विचार नहीं था। उसके साधारण विश्वास में, उसने विश्वास किया कि ये लड़ाई परमेश्वर की है, वह स्थिर खड़े होने पर सन्तुष्ट था और कि प्रभु का उद्धार देखे।

ये शौचालय इंजीनियरिंग की कोई सबसे उत्तम चीज़ नहीं थी। एक दिन जब सेनटोस इस्तेमाल कर रहा था, पूरी जमीन ढह गई? यहाँ हम दया का एक पर्दा खीचेंगे इस बाकी के दृश्यलेख में। इस अपमानित व्यक्ति ने अहसास किया कि वह परमेश्वर के विरुद्ध लड़ रहा है और बुरी तरह खोता जा रहा था। तरसुस के शाऊल की तरह वह पैमाने पर लात मार रहा था। वह अवश्य ही इसे उस दिन के अनुभव को दुहराना नहीं चाहता।

अब हम शुभ समाचार पर आते हैं। एक घृणतः उपकथा का प्रसन्नचित अन्त है। ये सेनटोस को मसीह के पास लाना था। जिसने हमसे ये कहानी बताई उसने कहा, "अद्‌भुत बात ये है कि जब सेनटोस ने अपने आपको मसीह को समर्पण किया उसने उसे पूरी रीति से दे दिया। अब वह एक भक्त मसीही भाई है। छोटी मंडली में पूरी संगति में और क्रियात्मक रूप से दूसरों तक पहुंचता है"।

भजनकार ने कहा है, "क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है" (भजन 149:4)। ये देखना आसान है कि वह किसी व्यक्ति जैसे आस्कर क्यूबास से प्रसन्न हो सकता है। इस घरेलू विश्वासी ने मसीह का उदाहरण दिया है। उसने धीरज से सहा जब उसने भलाई करने में सहा। उसने अपने अधिकार के लिये खड़े होने की अपेक्षा गलत होना चुन लिया। उसने उनके लिये प्रार्थना की जिन्होंने उसे यातनाएं दी और कि प्रभु बाकी कार्य करें। उसने विरोध नहीं किया।

> ऐसा कहकर आइये पूछें कि ऐसा क्यों है कि मसीही लोग विरोध ना करने वाले होते हैं। कारण ये है कि हम अपनी विश्वसनीयता को वैकल्पिक समाज की तरह खो देते हैं। यदि हम ठीक दूसरे लोग करते वैसा व्यवहार करते हैं। मसीह के प्रति हमारी गवाही का भाग और उसके उद्धार करने का अनुग्रह दीनता का व्यवहार है, दूसरे शब्दों में कि कलीसिया का पूरा मिशन, सुसमाचार की गवाही प्रभावित होती यदि मसीही लोग विरोध में अपने को दे देते या बदला लेते हैं।[15]

चौदह

उसने दूसरा गाल फेर दिया[16]

ये कहानी है जो लगता है हर समय युद्ध छिड़ जाने पर पुरुष और महिलाओं को सेना की सेवा के लिये बुलाती है। मूल कारण जानना असम्भव है। कोई शक नहीं ये कई बार होता है।

डॉक्टर जे. स्टुआर्ट होम्डन, एक ब्रिटिश प्रचारक, ने कहानी का अनुवाद दिया जिसे हम जान सकते हैं वह प्रमाणिक (वास्तविक) है इसलिये कि उसे एक सहभागी ने सीधे बताया था।

दूसरे विश्व युद्ध के अन्त में होल्डन की मुलाकात एक ब्रिटिश सारजेन्ट से हुई जो बहुत श्रेष्ठ मसीही था। जब होल्डन ने उससे पूछा कि वह कैसे मसीह यीशु के विश्वास में आ गया, सारजेन्ट ने समझाया कि मिस्र आने के पहले उसे माल्टा में ठहराया गया था।

उस कम्पनी में एक गैर सरकारी विश्वासी था जो दूसरे पुरुषों को गवाही देने में नहीं शर्माता था। उन्होंने उसे धमकाने/परेशान करने में आनन्द लिया, पर इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ा।

सारजेन्ट ने कहा, "एक रात हम सब अपनी टुकड़ी में वापस आये, बारिश से बहुत भीगे थे और बहुत थके थे। इससे पहले कि उसके सोने के स्थान में गिर जाता–इस गैर सरकारी ने घुटने टेके और प्रार्थना की। मैं अवश्य उसे करने देता। मेरे बूट कीचड़ से बहुत भारी हो गये थे और

मैंने उसके चेहरे की एक ओर अपने एक बूट से मारा, तब दूसरा बूट लिया और उसके चेहरे पर दूसरी ओर मारा। वह प्रार्थना करता ही रहा"।

अगली सुबह, सारजेन्ट बोलता रहा, "मैंने उन बूटों को अपने बंक के किनारे रखा हुआ देखा, सुन्दरता से पोलिश किया हुआ। ये गैर सरकारी का मेरी क्रूरता का प्रतिउत्तर था। इसने मेरे हृदय को तोड़ दिया। ठीक उसी दिन मेरा उद्धार हुआ"।

उस गैर सरकारी व्यक्ति का सारजेन्ट के सताव की प्रतिक्रिया एक स्पष्ट उद्धारकर्ता के शब्दों की तस्वीर थी, "जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे . . ." (लूका 6:29)। वह अपने स्वामी के पीछे व्यर्थ नहीं हो लिया।

मैं एक चितौनी का शब्द जोड़ना चाहूंगा। हमें ये नहीं मान लेना चाहिये कि हमेशा शारीरिक निन्दा मसीह के लिये तेजस्वी गवाही होती है विशेषकर सेना में। अक्सर मैं सोचता हूं, सांसारिक पुरुष और महिलायें एक विश्वासी के प्रति बहुत सम्मान रखते हैं जिसकी लग्न है और जो उनके लिये खड़ा रहने को तैयार रहते हैं। यदि एक सिपाही एक मसीही के विरुद्ध कार्य करता है तो दूसरे अविश्वासी अक्सर शीघ्र ही उसके बचाव के लिये आते हैं। वह परेशान मेम्ने की ओर पवन बहाता है, वह हमें जो सह सकते हैं उससे अधिक कभी भी विशेष समय में नहीं देता।

पन्द्रह

तीव्रतम गरमाहट की आग

अपनी पुस्तक "ग्रेस टू ग्लोरी"[17] मरडोक कैम्प वैल एक भक्त सेवक (पास्टर) के विषय बताता है जो उत्तरी स्कॉटलैंड में रहता था जिसकी पत्नी ने उसकी गहरी आत्मिकता को कभी नहीं बताया/बांटा। देखने में लगता नहीं था कि उसे प्रभु के लिये कुछ प्रेम था या उसके वचन के लिये। एक दिन जब मरडोक आग के किनारे बैठा था, बाइबल पढ़ रहा था। उसकी पत्नी क्रोध में घर में प्रवेश हुई। उसने पति के हाथ से किताब छीनी और आग में फैंक दिया।

एक मसीही की किस प्रकार इस क्रोध और कार्य के प्रति प्रतिक्रिया होगी? क्या उसे उसके इस गैर मसीही व्यवहार के लिये सख्ती से डांटना चाहिये? या उसे मसीही आत्मा दिखाने का अवसर इस्तेमाल करना चाहिये?"

पास्टर ने दूसरा विकल्प चुना, उसने पत्नी की ओर देखा और शान्त रूप से कहा, "मैं नहीं सोचता कि मैं इतनी अधिक गर्म आग के पास कभी बैठा"। यहाँ नीतिवचन की एक खास उदाहरण था, "कोमल उत्तर सुनने से जल जलाहट ठन्डी होती है" (नीतिवचन 15:1)।

मिस्टर कैम्पवैल लिखते हैं, "ये वो उत्तर था जिसने उसके क्रोध को दूर किया और एक नया और अनुग्रहीत जीवन का आरम्भ हुआ। उसकी येजाबेल लूदिया बन गई। कांटा एक फूल बन गया"।

पर तस्वीर को पूरा करने के लिये कुछ शीघ्र ही जोड़ना आवश्यक है। मसीही महिलाएं अक्सर अधिक आक्रमणकारी की अपेक्षा शिकार बन जाती हैं।

लिन्डा एक उदाहरण है।[18] इससे पहले कि उसका उद्धार हुआ था, उसने एक टोनी नाम के व्यक्ति के साथ विवाह किया। उसने सोचा वह देखने में सुन्दर और आकर्षित है।

जब उसका पहला बच्चा पैदा हुआ और वह विश्वासी बन गई थी। वह जानती थी कि टोनी एक खोया हुआ है। वह देखने से नहीं समझ सकी थी। वह काम के प्रति नीरस था और जिम्मेवारियों के प्रति दिलचस्प नहीं था। वह शराबी और छोकरीबाज था। कभी कभी वह महिनों तक चला जाता और तब घर लौटता मानो कुछ नहीं हुआ, और फिर लिन्डा के साथ उसके पति की तरह रहता। उस समय तक दूसरा बच्चा पैदा हो गया था, और वह फिर चला जाता, लिन्डा को छोड़ जाता कि वह परिवार का पोषण करें।

एक भक्त पत्नी होकर उसने इस प्रकार चलना सीख लिया जैसा 1 पतरस 3:1–2 में बयान है।

> इसी प्रकार तुम पत्नियो, अपने अपने पतियों के आधीन रहो, भले ही कोई जो वचन की आज्ञा न माने, वे बिना वचन के अपनी पत्नी के चाल चलन से खिंच जायें, जब वे तुम्हें देखते वह चाल चलन भय के साथ चलते हैं।

विरोध करने की अपेक्षा या तंत्र करने के लिन्डा ने अपने पति को धार्मिकता के जीवन से जीतने का प्रयास किया और उस व्यवहार से जो दूसरे संसार से आता है। ऐसी महिलाओं के विषय किताबें लिखी जा सकती हैं जिन्होंने पतरस की सलाह मानी और इस प्रकार जियी कि अपने पतियों को मसीह के पास आते देखें।

सोलह

अपने शत्रुओं से प्रेम करो

कोई प्रश्न नहीं कि यीशु ने कहा, "अपने शत्रुओं से प्रेम करो" (लूका 6:27)। क्या उसने इसे वास्तविकता में चाहा? या वह इसे एक आदर्श की तरह पकड़े रहा था। उसकी ओर कि हम इस पर संघर्ष/मुकाबला करें? ये इतना अस्वाभाविक है कि एक के शत्रु से प्रेम करें। हम क्यों उनसे प्रेम करें, जबकि वे शायद केवल हिंसा को बढ़ायेंगे? जो हमसे घृणा करते हैं बड़ा असम्भव लगता है कि उन से प्रेम करें। तो प्रभु की ये आज्ञा पढ़कर हम आसान स्तर बनाये रखने के लिये इसे दूर करते हैं।

फिर भी अपने हृदय की गहराई में हम जानते हैं कि जो प्रभु यीशु का मतलब है जो उसने कहा, हम जो भूल जाते वह ये है कि जब वह कुछ की आज्ञा देता है, वह हमें आज्ञा पालन करने की सामर्थ देता है। मानव रूप से कहा जाये तो ये असम्भव है कि अपने शत्रुओं से प्रेम करें। ये एक मसीही के साधारण जीवन में सत्य है। इसे केवल अन्दर बास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा जिया जा सकता है।

हमारी धारणा है कि उद्धारकर्ता के वचनों की तेजधार को धीमा करने का अन्त करते, जब हम आज्ञा का पालन करते दूसरे विश्वासी के द्वारा देखते हैं। धर्मशास्त्र के बहुत से पद हमारे लिये जीवित हो उठते हैं जब हम उन्हें कार्य करते देखते हैं। आप एक तथ्य के विरुद्ध बहस नहीं

कर सकते। मुझे एक मसीही दिखाओ जो अपने शत्रु से प्रेम करता है और मैं आश्वस्त हूं।

ये मेरे साथ हुआ। मैंने लूका 6:27 मानव जीवन में चमकते देखा। यह एक व्यक्ति के जीवन में था जिसका नाम "थियो मैंकुली" था। वह "मैक कुली" का पिता था जो इक्योडर का पांच में से एक शहीद था और बाइबल स्कूल का चैयरमेन था। जहां मैं एक प्रबन्धक था।

एक रात मैं और वो स्कूल के वर्तमान विषय पर चर्चा करने को मिले और हमने कुछ निर्णयों का सामना किया। मि॰ मैक कुली ने मुझे कभी नहीं बताया कि क्या करना है। उसने हमेशा कहा, "आओ, उसके विषय प्रार्थना करें"। तो मीटिंग के समाप्त होने पर हम अपने घुटनों पर आये और लम्बे समय तक प्रार्थना की स्कूल के सम्बन्ध में?

जब वह अपनी प्रार्थना के समापन में आया, उसका दिमाग क्यूरेरी नदी इक्वेटर के दक्षिण किनारे पर गया जहां पाषाण युग के वासियों ने उसके मिशनरी पुत्र को भाला मारकर मार डाला था। ऐड एक आदर्श पुत्र था, उसके पिता ने एक बार मुझे बताया कि ऐड ने कभी भी अपने माता–पिता को उत्तेजनामय क्षण नहीं दिया। अब थियो ने प्रार्थना की, "प्रभु, मुझे लम्बा जीवन दे कि मैं उन लोगों को उद्धार पाये देख सकूं जिन्होंने हमारे लड़कों को मार डाला है, जिससे मैं अपनी बाहों में ले सकूं और उन से कहूं मैं उनसे प्रेम करता हूं इसलिये कि वे मेरे मसीह से प्रेम करते हैं"।

जब हम उठे, आंसू उसके गाल पर इधर उधर बह रहे थे। ये पवित्र क्षण था जो पुनः कभी नहीं लिया जा सकता था। यहां वह व्यक्ति था जिसने सच में दोषी हत्यारों से जिन्होंने उसके पुत्र को मार डाला प्रेम किया, एक पुत्र जिसने सुसमाचार को औका (बाओरेनी के नाम से जाना जाता है) में लाने के लिये अपना कानूनी पेशे को त्याग दिया था।

आश्चर्य की बात नहीं, ये प्रार्थना थी जो परमेश्वर के सिंहासन तक पहुंची। मिशनरियों ने सफलतापूर्वक "वाओरेनी" से सम्पर्क किया और समय में बहुत से हत्यारों को मसीह के पास ले आये। थियो की प्रार्थना का उत्तर दिया गया। वह इक्वेडोर गया, नये विश्वासियों को प्रेम से

आलिंगन किया और उन्हें बताया कि उसने उनसे प्रेम किया क्योंकि उनको उद्धारकर्ता अब उनका भी उद्धारकर्ता था।

हां! यीशु का मतलब वही जो उसने कहा। हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करना चाहिये। जब हम ऐसा करते हैं, हम संसार पर असर डालते हैं। हम दूसरे विश्वासियों को आज्ञा के पालन करने का व्यवहारिक तरीका दिखाते हैं। हम यीशु के कठिन कहे हुए को जीवन में लाते हैं। और हम सच्चा प्रतिनिधित्व जो यीशु की नाईं है प्रगट करते हैं। उसने हमसे प्रेम किया? उसके शत्रुओं से? हमारे लिये मरना काफी है।

सत्रह

क्षमा करना दैविय है[19]

हौलेन्ड में एक भक्त मसीही परिवार में दस लोग थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उनके घर यहूदी लोगों के लिये स्वर्ग था जो नाजियों से छिपने का प्रयास कर रहे थे। यदि यहूदी को पता लग गया तो इसका मतलब नजरबंदी कैम्प में बयान से बाहर यातनाएं और अक्सर मृत्यु। यहूदियों को उस समय छिपाने का मतलब है नज़र बन्दी कैम्प भी है।

काफी लम्बे अरसे तक यहूदियों को सफलतापूर्वक शरण देने के बाद, तब दस लोग पकड़े गये पिता और दो पुत्रियां, "कोरी और बैटसी" रेवेन्स ब्रुक कैम्प ले जाई गई। वह एक क्रूरता का अमानवीय यातना का स्थान है। मि॰ टैन बूम और तब बैटसी मर गये। कोरी बच गई और जब युद्ध समाप्त हो गया उसे छोड़ दिया गया।

शान्ति घोषित होने के बाद, कोरी जर्मनी गई और एक रात चर्च इमारत के तहखाने के हॉल में बोल रही थी। दूसरी चीज़ों के साथ उसने उस आश्चर्य का वर्णन किया कि जब हम अपने पापों का अंगीकार करते हैं, तो प्रभु उन्हें सबसे गहरे समुद्र में फैंक देता और एक निशान पैदा करता जो कहता है, "कोई मछली नहीं पकड़ना हैं"।

आराधना के समापन पर लोग खामोशी से बाहर आये, पर एक व्यक्ति ने रास्ता बनाकर सामने गया जहां कोरी खड़ी थी। वह नीली यूनिफार्म पहने था और एक ऐसी टोपी लिये हुए था जिस पर खोपड़ी और

आपस में काटी हुई हड्डियां बनी थीं। कोरी ने उसे पहचान लिया। वह रेवेन्स ब्रुक कैम्प का एक पहरेदार था।

जब वह कोरी के पास पहुंचा उसने अपना हाथ पकड़ा और कहा, "बहुत अच्छा सन्देश", ये जानना कितना अच्छा है कि जैसा आपने कहा कि "हमारे सब पाप समुद्र की तली में हैं"।

उसकी क्रूरता की याद उसके सामने आ गई और उसका खून खौल उठा। "तुमने रेवेन्स ब्रुक का वर्णन किया" वह बोलता रहा, "मैं वहां पहरेदार था, पर उस समय से मैं एक मसीही बन गया। मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने मुझे क्रूरता की चीज़ों के लिये जो वहां मैंने किया क्षमा कर दिया है पर मैं आपके मुंह से भी यही सुनना चाहता हूं, क्या आप मुझे क्षमा करोगी?"

कोरी की प्रतिक्रिया समझने वाली है कि कड़ी और क्षमा ना करने वाली है, उसने वह क्रूरता जो यहूदियों के विरुद्ध की गई थी पुनः दुहरा सकती थी और जो अमानवीय व्यवहार उसके परिवार के साथ किया गया था जब तक कि उसके पेट के रस सलफ्यूरिक ऐसिड में ना बदल गये।

कोरी वहां आवाक् खड़ी रही, ये ऐसा घन्टों लगता रहा, यद्यपि ये कुछ सेकेन्डों के लिये था इससे पहले कि वह उत्तर दे सकती। अन्त में वह अपना हाथ अपने कोट की जेब से बाहर निकाल सकी और अपना हाथ उस पहरेदार के हाथों पर रख दिया, "यदि परमेश्वर ने मुझे क्षमा कर दिया है, तो मैं कैसे आपको क्षमा करने में कमी कर सकती हूं, मैं आपको क्षमा करती हूं, भाई अपने पूरे हृदय से"।

"काफी लम्बे समय तक वे एक दूसरे का हाथ थामे रहे—पूर्व पहरेदार और पूर्व कैदी अब मसीह में एक बनाये गये हैं"।

जब कभी मैं मसीह के समान व्यवहार को सोचता हूं तो मेरा दिमाग एकदम टेन बूम के परिवार पर जाता है। ऐसा दुःख, ऐसी यातना, ऐसा अपमान/अनादर, फिर भी इन सब में उनके पास मसीह का मन था दूसरों के विषय में सोचना, अपने स्वयं के लिये नहीं। वे कहते कड़वे नहीं बने या सनकी, ना उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत की, इन सब में से उन्होंने प्रभु के प्रेम और दया की गवाही दी और उन्हें क्षमा किया। जिन्होंने उन्हें ताज़ी की क्रूरता की आग में डाला था।

अठारह

जहां इच्छा है...[20]

नानी फिलिप्स ने अक्सर आनन्द किया कि उसके दो पुत्र और उनकी पत्नियां आनन्द के साथ संगति में रहते थे। वे सब विश्वासी थे वैसे ही उनके बच्चे थे। बड़ा पुत्र स्कॉट और उसकी पत्नी सारा उसी नगर में रहते थे और उसे लगातार भेंट करते थे, ये निश्चय करते कि वह अच्छी तरह खाती और अपने घर की देखभाल करने योग्य थी। दूसरा पुत्र रोन और उसकी पत्नी रोज़ भी लगातार भेंट करते यद्यपि वे 20 मील दूर रहते थे। दोनों पुत्रों के पद/स्थान अच्छे थे और वे आर्थिक रूप से सुरक्षित थे। पूरा परिवार धन्यवाद देते और क्रिसमस पर साथ मनाते और समय समय पर बाहर भोज करने हेत्।

तब नानी अचानक कोरानरी (हृदय) के कारण मर गई। उन्होंने उसे अपने आराम कुर्सी पर बैठे पाया और उसकी गोद में खुली बाइबल थी।

उसने अधिक कुछ नहीं छोड़ा। एक सीधा–साधा मर्यादित घर था जहां वह और उसके (मृतक) पति ने इन लड़कों का पालन पोषण किया था। उसके पास थोड़ा कुछ सामान था, जैसे एटी और टी, जनरल इलेट्रिक, और जनरल मोटर्स। उसका बचत खाता डॉलर 10,000 का था और उसका जमा किया हुआ बोन चाइना के चाय के कप थे। उसने

अन्तिम इच्छा नहीं छोड़ी थी और वर्णन, सोचते हुए कि लड़के शान्तिपूर्वक चीज़ों का बंटवारा ले सकेंगे।

ऐसा नहीं है जो हुआ। रोज़ अचानक अत्याधिक स्वामित्व महसूस करने लगा। रौन ने महसूस किया कि उसके पास कोई विकल्प नहीं रह गया केवल अपनी पत्नी के प्रति विश्वसनीय होने के। उसके लिये ये शान्ति का मामला था, किसी भी कीमत पर। एक परिवार जो बरसों से आनन्द से रह रहा था और अब लालच में टूट गया था। तीन प्रकार की चीज़ें जैसे बोन चाइना प्याले ये विरोधाभास का कारण है। स्कॉट और सारा ने उत्तम समझौता कारी बनने का प्रयत्न किया, पर बड़े भेदभाव के साथ मिले।

जैसे स्कॉट और सारा ने शान्तिपूर्ण समाधान के लिये बोझ के साथ प्रार्थना की। स्कॉट ने अब्राहम और लूत की कहानी को याद किया। जब इन दोनों ने मिस्र देश छोड़ा और कनान आये, उन्होंने पाया कि उनके जानवरों के लिये काफी चारागाह नहीं है, उनके चरवाहों के बीच झगड़े होने लगे और परिस्थिति गम्भीर हो गई तब अब्राहम ने लूत से कहाः

> "तेरे और मेरे बीच कोई झगड़ा ना हो और ना तेरे और मेरे चरवाहों के बीच हो क्योंकि हम आपस में भाई हैं"।
>
> "क्या पूरा देश तेरे सामने खुला नहीं? कृपाकर मुझ से अलग हो। यदि तू बायें को जाये जब तब मैं दाहिने जाऊंगा या तू दाहिने जाये तो मैं बांये जाऊंगा" (उत्पत्ति 13:8–9)।

लूत ने अच्छे पानी का स्थान यर्दन का जहां चारागाह अच्छे थे चुना और वह सदोम शहर में रहा। अब्राहम ने कनान का देश चुना।

जैसे स्कॉट ने इसे अपनी पत्नी सारा से बयान किया वे एक क्षण के निर्णय पर आ गये वे रोन को रोज को पूरी जगह चाहें तो लेने देंगे। परिवार की एकता बचाये रखने के लिये चीज़ों पर लड़ने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

रौन और रोज़ उलझन में पड़ गये थे क्योंकि उन्होंने इसकी आशा

नहीं की थी, वे अधिक शर्मिन्दा थे। सब कुछ लेने के लिये। रोज़ ने अपने आप को कुछ वस्त्र और गहने से ही सन्तुष्ट किया, चीनी मिट्टी और दूसरी चीज़ों से। तब उन्होंने सुझाव दिया कि बाकी की चीज़ों को बराबरी से बांट लें। ये शान्तिमय समाधान था, एक सम्भावित हस्तान्तरण का समाधान।

परमेश्वर का तरीका सबसे उत्तम तरीका है। अब्राहम अपनी सम्पत्ति का अधिकार लूत को देकर धनी हो गया, लूत अपने आपको सदोम के पास के चारागाह को चुनकर कंगाल बना लिया।

उन्नीस

थूकना और शर्म को सहना

डिक फैल्कनेर एक गीतों के अगुवे के रूप में नये नियम की कलीसिया के झुण्ड की सेवा कर रहा था। वे एजियन समुद्र में पतमुस टापू में आये थे। उनका गाइड उन्हें उस गुफा में ले गया जहां प्रेरित यूहन्ना ने कहा जाता कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा। जब वे बाहर निकले, वे बगल की पहाड़ी पर चढ़ गये जहां आयोजक ने एक सन्देश दिया, यूहन्ना की सम्राट डोमीशियन के द्वारा बन्दीगृह में डाले जाने के विषय। जब उसने समाप्त किया उसने डिक से गाने को कहा।

डिक एक टेप रिकार्डर बड़े स्पीकरर्स के साथ पकड़े हुए था जो उसकी आवाज को बढ़ा सकता है। वह डौन विर्टजैन के प्रकाशितवाक्य 5:12 के अनुवाद को गाने लगाः—

मेम्ना योग्य है जो मारा गया
मेम्ना योग्य है जो मारा गया,
मेम्ना योग्य है जो मारा गया कि पायेः
शक्ति और धन और बुद्धि और सामर्थ,
सम्मान, और महिमा और आशीष!
मेम्ना योग्य है

मेम्ना योग्य है,
मेम्ना जो मारा गया योग्य है
मेम्ना योग्य है।
ये सन्देश पतमुस के चट्टानमय धरती पर ऊपर तक गया।

इससे पहले कि डिक ने समाप्त किया, दूसरी टूर की बस आई, बहुत से लोग पास से गुज़र गये। पर एक छोटी, काली स्त्री डिक के पास आई और उसके मुंह पर थूका। उसका उद्देश्य अच्छा था, उसने अपने लक्ष्य को ठोंका पर उसने गाने को न रोक सका। डिक गाने के आखिर तक गया जब तक वह अन्त में "मेम्ना योग्य है" तक ना पहुंचा।

कुछ मसीही दूर पार्टी ने महसूस किया कि इस निन्दक को कुछ कहना या करना चाहिये इस बड़ी निन्दा के लिये, पर डिक ने इस भावना को नहीं बांटा। अन्त में पुरुषों ने प्रभु के चेहरे को शर्म और थूकने से ढांप दिया और उसने वापस झगड़ा नहीं किया। उसकी निन्दा की गई और ठट्ठा उड़ाया गया और उस पर थूका गया पर उसने जैसे को तैसा नहीं लौटाया। जब लोगों ने प्रभु यीशु पर थूका तो ये सृष्टि सृष्टिकर्ता से कह रही है, "यही हम तेरे विषय सोचते हैं" जब सृष्टिकर्ता क्रूस पर मर गया तो वह अपने प्राणियों से कह रहा था, "ये ऐसा ही प्रेम मैं तुम से करता हूं"।

हम उसकी आत्मा पाने के लिये बुलाये गये हैं, "हे प्रियो, अपना पल्टा ना लेना, परन्तु क्रोध को अवसर दो क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है प्रभु कहता है कि मैं ही बदला दूंगा" (रोमियों 14:19)। हम प्रभु के स्वीकार्य वर्ष में जी रहे हैं पर परमेश्वर के बदला लेने के दिनों में नहीं।

बीस

रद्दी/कूड़ा-करकट का यहूदी व्यापारी

बीते हुए दिनों में जब लोग समाचार पत्रों को बचाकर रखते, चिथड़े, और लोहा लंगड़, वे समय समय पर सड़क पर कबाड़ी की आवाज सुनते और पहले से उसकी उपस्थिति को देखते हैं।

एक दिन एच.ए. आयरनसाइड ने वही परिचित आवाज बाहर सुनी और व्यक्ति को तहखाने में बुलाया। ये विशेष कबाड़ी यहूदी था, वो लोग जिनके प्रति आयरनसाइड बहुत स्नेह रखता था। क्योंकि उसका उद्धारकर्ता भी यहूदी था।

तहखाने में अखबार का अम्बार लगा हुआ था और काफी बड़ा ढेर पाइपों का था और दूसरे धातू थे।

आयरनसाइड ने एक मित्रता पूर्ण सौदा करने का निश्चय किया, जितना सम्भव हो सके पाने का प्रयास किया। इसलिये नहीं कि वह उसकी परवाह करता है। महत्वपूर्ण बात ये थी कि कबाड़ को तहखाने से बाहर करें।

तो उसने अपने बहिष्कृत जमा किये सामान की बड़ी कीमत लगाई, पर व्यापारी अपनी सोच पर था तो उसने एक खेल उत्तमता से खेला और जीत गया। उसने एक हल्का/सस्ता दाम आयरनसाइड के हाथों में दे दिया और सामान को अपनी गाड़ी में भरने लगा।

जैसे ही वह अन्तिम बोझ के साथ जाने वाला था, डा॰ आयरनसाइड

ने उसे वापस बुलाया, कुछ पैसा उसके हाथों में दबाया और कहा, "यहाँ मैं आपको ये यीशु के नाम में देता हूं"।

वह कबाड़ी क्षण भर के लिये चकित हो गया और बड़बड़ाता चला गया कि "कभी किसी ने मुझे इससे पहले यीशु के नाम में कुछ नहीं दिया"।

"क्या ये डा॰ आयरनसाइड के द्वारा कृपा का काम नहीं था ऐसा जो प्रभु के द्वारा किया जाता?

इक्कीस

सम्राट के तलवार बाज

मसीह के पुनः जी उठने के कुछ समय बाद जब कुख्यात नीरो शासन करता था। उसको सैनिकों ने विशिष्ट वर्ग में विभाजित किया था। वे अपनी खेलकूद की ख्याति में चुने गये थे। वे सम्राट के तलवार बाजियों के रूप में जाते थे। शारीरिक रूप से ये मानवता के विशेष पुरुष थे। वे सुन्दर थे, सुडौल थे और रोमी पुरुषत्व की जान थे।

जब वे कोलेसियम में मार्च करते, उन्होंने गाया, "हम सम्राट के पहलवान हैं, हम आपके लिये लड़ते हैं। हे राजा, चाहे जियें या मरें, ये सब आपकी महिमा के लिये है" और तब ये नीरो के लिये कुश्ती का खेल (मैच) रखते हैं।

ऐसा समय आया कि उन्हें उत्तर में जरमेनिक जनजाति से लड़ने को भेजा गया, ये वो समय भी था कि जब ऐसी राजाज्ञा निकली कि मसीही विश्वास को दबाना है। नीरो ने विशेष आज्ञा दी कि यदि सेना में कोई मसीही है तो उसे बाहर निकाल दें। "छटनी" का मतलब ये है नाश करने के लिये मंगलभाषी उपयोग करना है।

गहन ठन्ड के समय में जनरल वेसपासियन ने अपनी टुकड़ी को लाइन में खड़ा किया, जिसमें भी थे। वह चिल्लाया, "ये मेरे ध्यान में लाया गया है कि तुम में से कुछ इसके प्रति अधिक तेज हो। पर यदि तुम में

कोई मसीही है तो मैं चाहता हूं कि सामने आये" उसके आश्चर्य में 40 तलवारियों ने आगे कदम बढ़ाया जिसका मतलब मृत्यु है।

जनरल ने टुकड़ी के बाकी लोगों को भेज दिया और उन चालीस से उनके विश्वास के विषय बात करने का प्रयास किया। "अपने परिवार के बारे में सोचो, अपने साथी सैनिकों के विषय सोचो, उस पर सोचो जो तुम खोदोगे, यदि मसीहत का परित्याग नहीं करोगे तो उसके परिणाम के विषय सोचो"। चालीसों ने उसके आग्रह और धमकी के विषय पूरी तौर से अप्रभावित दिखे।

जब वेसपासियन ने देखा कि आगे के प्रयास असफल हैं, उसने अपनी सेना को इक्ट्ठे किया और अन्तिम अवसर दिया कि वापस हो लें। "मैं इस सेना में किसी भी मसीही को आज्ञा देता हूं कि सामने आयें, "वे 40 सैनिक बिना हिचकिचाहट के सामने आये। वह इन्हें मार डालने की आज्ञा दे सकता था उसी समय पर उसकी योजना कुछ अलग थी।

जब अंधेरा हुआ उसके सैनिकों ने उन्हें बर्फ से जमी हुई झील में ले गये। उनके कपड़े उतार कर उस जमी झील में कड़ी ठन्ड में मरने को छोड़ दिया। बेसपासियन ने उन नंगे पुरुषों से कहा, "यदि तुम अपने होश में आ जाओ और अपने विश्वास को तिरस्कार करो तब किनारे पर वापस आ जाना। पूरी झील के चारों ओर आग होगी साथ ही गरम कपड़े वा भोजन होगा"।

पूरी रात दूसरे सैनिक जिन्हें झील के चारों तरफ लगाया गया था उस अन्धकार में साथ साथ ये देखने का प्रयास कर रहे कि क्या होगा। वे देख नहीं सकें पर हर बार उन्होंने पुरुषों को गाते सुना, "हम मसीह के चालीस योद्धा हैं, हम आपके लिये लड़ते हैं। हे राजा! मरें या जियें ये तेरी महिमा के लिये है"।

भोर होते होते उन्होंने एक दयनीय पीड़ामय को उस बर्फ में किनारे की ओर आते देखा, सैनिक उसकी ओर दौड़े, कम्बल से लपेटा, आग के पास ले आये। उस व्यक्ति ने अपने विश्वास का तिरस्कार कर दिया था।

तब उस बर्फीली झील में से उन्होंने गाना सुना, "हम उन्तालीस

मसीह के योद्धा हैं। हम तेरे लिये लड़ते हैं हे राजा! जियें या मरें ये आपकी महिमा के लिये हैं"

जनरल बेसपासियन समय पर वहां आया और उस परित्याग करने वाले को देखा और उन्तालीस विजयी को गाते सुना। उसका संकल्प दृढ़ था। उसने अपने हथियार उतार दिये और उन उन्तालिस के साथ मरने को चला गया जो प्रभु का तिरस्कार करने की अपेक्षा मरना पसन्द करते।

बाइस

प्रतिज्ञा के साथ प्रथम आज्ञा

"रूबेन टोरी" अमरीकन सुसमाचार प्रचारक और बाइबल शोधकर्ता, जॉर्जिया की एक विधवा मां के विषय में बताता था जिसका एक ही बेटा था। वे गरीबी रेखा के नीचे जीते थे पर वह धुलाई कर किसी तरह भोजन का प्रबन्ध करती थी। उसने शिकायत नहीं की। उसने इसे प्रभु की ओर से स्वीकार किया।

बेटा विशेष रूप से बुद्धिमान था। वास्तव में वह हाई स्कूल में सबसे अच्छा उच्च विद्यार्थी था। प्रभु के अलावा वह अपनी माँ के जीवन में चमकता हुआ तारा था।

उसके शिक्षा के रिकॉर्ड के कारण आने वाले कार्यक्रम में, उसे समापन सन्देश देने के लिये चुना गया। उसे अपने विषय में अति उत्तम होने के कारण स्वर्ण पदक भी दिया जाना था।

जब ग्रेजएशन का दिन आया उसने देखा कि उसकी माँ वहां उपस्थित होने की कोई तैयारी नहीं कर रही थी। उसने माँ से कहा, "माँ, ये आज्ञा का दिन है, ये वो दिन है जिसमें मैं ग्रेजुएट हो रहा हूँ, आप तैयार क्यों नहीं हो रही हो?"

"ओह!" उसने उबाक रूप से कहा, "मैं नहीं जा रही, मेरे पास कोई अच्छे कपड़े पहनने के लिये नहीं हैं। शहर के बड़े बड़े लोग वहाँ होंगे

अपनी अच्छी अच्छी पोशाकों में, तुम्हें अपनी बूढ़ी माँ को इन सूती कपड़ों में देखकर शर्म आयेगी"।

उसकी आंखें अपनी मां के प्रति प्रशंसा से चमक उठीं, "माँ" उसने कहा, "ऐसा ना कहो", मैं आपके प्रति कभी भी शर्मिन्दा नहीं होऊंगा। संसार में मेरे पास जो कुछ है वह मैं आपके प्रति ऋणी हूं और मैं नहीं जाऊंगा यदि आप नहीं चलोगी तो" उसने आग्रह किया, जब तक वह राजी न हो गई और उसे अच्छा वस्त्र पहनने में सहायता की।

वे बाहों में बाहें डालकर सड़क पर नीचे उतरे। एक बार हाईस्कूल के ऑडिटोरियम में अन्दर आ गये – उसने सामने की सबसे अच्छी सीट पर उसे ले जाकर बैठाया। वहां वह अपनी ताजा प्रेस की गई कॉटन वस्त्र पहन कर शहर के गणमान्य लोगों के बीच बैठ गई।

जब उसका समय आया, उसने बिना हिचकिचाहट के समापन सन्देश दिया। वहां काफी प्रशंसा हुई। तब प्रिंसपल ने उसे स्वर्ग पदक देकर सम्मानित किया। जैसे ही उसने प्राप्त किया वह शीघ्र प्लेटफार्म से नीचे उतरा और सीधे अपनी माँ के पास आया और अपनी माँ के वस्त्र पर लगा दिया और कहा: "यहाँ माँ ये आपका है, ये आप ही हैं जिसने कमाया है"। इस समय तालियों की गड़गड़ाहट से स्थान गूंज गया, पूरा स्टेडियम खड़ा हो गया और बहुतों की आंखों से आंसू छलक उठे।

उस बेटे ने इफिसियों 6:2 का जीवित उदाहरण प्रस्तुत किया: "अपने माता–पिता का आदर कर"। जब कभी डॉ॰ टोरी ने कहानी बताई, उसने एक अतिरिक्त बात रखी। उसने कहा, "प्रभु यीशु के लिये कभी शर्मिन्दा ना हो"। सबके लिये आप उसके ऋणी हैं। खड़े हो और उसे अंगीकार करो। शहीद शर्मिन्दा नहीं हैं। उनीसीफुक्स पौलुस के लिये शर्मिन्दा नहीं था (2 तीमुथियुस 1:6)। पौलुस सुसमाचार के लिये शर्मिन्दा नहीं था (रोमियों 1:16) या उससे जिसमें उसने विश्वास किया (2 तीमुथियुस 1:12)। हमें मसीह के लिये कभी शर्मिन्दा नहीं होना चाहिये"।

तेइस

परमेश्वर जो प्रेम करता है[21]

मसीही मिशन के इतिहास में, ग्लेडिस एल्वार्ड हमेशा जानी जायेगी। एक "छोटी महिला" की तरह, पर उसे क्या कमी थी। शारीरिक बनावट में, वह अधिक आत्मिक उपलब्धियों में बनाई गई थी। ये निर्भीक/साहसी मिशनरी का प्रभु यीशु पर साधारण विश्वास था और बिना भय के प्रगट किया और उसकी सेवा में धैर्य और सहनशीलता बनाये रखा। परिणाम स्वरूप उसने प्रार्थना के अद्भुत उत्तर देखे, आश्चर्यमय परिस्थितियों का परिवर्तन और चीन में आश्चर्यजनक द्वार सुसमाचार के लिये खुले।

एक बार वह शरणार्थी विद्यार्थी के साथ एक घर में ठहरी हुई थी जो जापानी हमले से भाग कर आये थे। ये लोग उत्तर पश्चिम के क्षेत्र के लिये प्रार्थना कर रहे थे -- कई कारणों से वे जाने के लिये स्वतंत्र नहीं थे। तो ग्लेडिस ने समापन किया कि प्रभु चाहता है कि वह करें। उसने निर्धारित किया गाड़ियों पर निर्भर कि एक गांव से दूसरे में ले जाये। जब वह टीसिन--टीसिन पहुंची गांव वालों ने उसे आगे जाने से रोका। उन्होंने कहा, ये ही अन्त है आगे कुछ भी नहीं है"। पर ग्लेडिस ने इसका विरोध किया, "संसार का इस प्रकार अन्त नहीं होता, मुझे आगे जाना ही है, इसीलिये तो मैं आई हूं"।

जब एक चीनी मसीही डॉक्टर जिसका नाम "हुआंग" था, उसने निश्चय किया, उसने 5 दिन तक साथ चलने के लिये अपने को पेश

किया। 5 दिन 10 दिन में खिंच गये, जैसा वे हर एक से बोले वे यीशु के विषय मिले। किसी ने भी उसके विषय में नहीं सुना था। ग्यारहवें दिन वे ऐसी जगह से गुजरे जहां मानव के रहने का कोई चिन्ह नहीं था। "प्रिय परमेश्वर, हम पर दया कर, आप देख सकते हो हम कैसी हालत में हैं। हमें भोजन और रात को शरण के लिये स्थान दे" उसने अपने आपको निन्दित महसूस किया कि उसकी प्रार्थना सब उसके और डॉक्टर के विषय थी।

तब डॉक्टर हुआंग ने प्रार्थना की : "हे परमेश्वर, किसी को हमारे पास भेज जो हमें यीशु के विषय में बता सके। आज हमने किसी को भी गवाही नहीं दी है, पर आपने हमें यहां भेजा है कुछ विशेष अभिप्राय के लिये। हमें जगह दिखा कि हम व्यक्ति को पायें जिसे आप आशीष देना चाहते हैं"। ये व्यक्ति केवल परमेश्वर के कार्य के लिये रूचिकर था।

ग्लेडिस ने निश्चय किया कि उसे एक कोरस गाना है, तो शब्द और मधुरता हवा में फैल गया।

शीघ्र ही डा॰ हुआंग ने दूर एक व्यक्ति को देखा, और उसे मिलने दौड़ पड़ा। डा॰ ने मिस एलवर्ड को आने को कहा पर वह सीधी चढ़ाई नहीं चढ़ना चाहती थी, ऊबड़ खाबड़, पहाड़ और अपना सामान बिना सुरक्षा नहीं छोड़ना चाहती थी। तब वह वापस आया और उसे आने के लिये समझाया। उसे सामान की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, वहां चोरी करने वाला कोई नहीं था।

जब वे उस आदमी के पास पहुंचे, तब उसे आश्चर्य हुआ कि वह एक तिब्बती लामा था या संत था। तथ्यों के अलावा लामाओं की स्त्रियों से कुछ लेना देना नहीं होता। इसने हुआंग और ग्लेडिस का आने का निमंत्रण दिया और रात आश्रम में बिताई। जब पुजारी ने देखा कि वह हिचकिचा रही है, उसने कहा, "हम अरसे से इन्तजार कर रहे थे तुम्हारे लिये कि हमें परमेश्वर के विषय बतायें जो प्रेम करता है"? ऐसा कौनसा सम्पर्क मिशनरियों के साथ रहा होगा या किसी दूसरे के साथ बाहरी दुनिया से?

जब लामाओं ने गद्दियां, धोने के लिये पानी और स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध कराया जो दो जन ग्लेडिस के दरवाजे पर दिखे और उससे साथ चलने को कहा। दूसरों ने डा॰ हुआंग को उसी स्थान पर लाया, एक कमरे में 500 मठवासी बैठे थे। इस सबने ग्लेडिस को आश्चर्य में डाल दिया पर अच्छे डा॰ ने अभिप्राय समझ लिया होगा। तो उसने ग्लेडिस से कोरस गाने को आरम्भ करने को कहा। जब उसने समाप्त किया। उसने उद्धारकर्ता के बैतलेहम में जन्म के बारे में बताया और उद्धारकर्ता की मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बताया।

मिस एलवार्ड ने फिर गाया तब बातें की, फिर गाया, तब डा॰ हुआंग ने बातें की, फिर गाया तब बातें की। और अन्त में वह क्षमा मांगकर अपने कमरे में चली गई। वह थक चुकी थी पर उसका काम खत्म नहीं हुआ था। दो लामा उसके दरवाजे पर दिखे और उससे और अधिक बताने को कहा, जब वे चले गये, दो और आये और ये सारी रात चलता रहा। वे लगा कि विशेषरूप से दिलचस्प हैं उस ईश्वर में जो प्रेम करता है।

पांच दिन के बिना रूकावट के सुसमाचार प्रचार के बाद तब मिस ऐलवर्ड को मुखिया लामा के पास आमंत्रित किया गया। उसको राहत मिली उसे मालूम पड़ा कि वह "मेन्डरीन" में बोल सकता है जिसे वह अच्छी तरह समझती थी। उसने पूछा कि क्यों उसने एक विदेशी महिला को आश्रम में आने की अनुमति दी थी और पंडित से बातें कर सके तब उसने इस अद्‌भुत कहानी को दुबारा बताया:

हर वर्ष लामा लोग लिकोरिक जड़ी बूटी जमा करते और बेचते जो पहाड़ों पर उगती है। एक वर्ष जब वे एक गाँव में आये, एक आदमी हाथ में "ट्रेक्ट" लिये कह रहा था, "कौन एक चाहता है? उद्धार मुफ्त है और कुछ नहीं। वह जो उद्धार पाता है सर्वदा के लिये जीता है। यदि आप अधिक जानना चाहते हो तो सुसमाचार हॉल में आइये"।

वे ट्रेक्स को अपने आश्रम में ले गये और दीवार पर चिपका दिया। उस पर यूहन्ना 3:16 लिखा हुआ था, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर

विश्वास करें वह नाश ना हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये"। ये उनके लिये लगातार एक स्मरण दिलाने वाला था कि एक परमेश्वर है जो प्रेम करता है।

पाँच वर्षों तक वे जड़ी बूटियों को बाज़ार में ले गये, हर बार वे पूछते "परमेश्वर जो प्रेम करता कहाँ रहता है"। अन्त में "लेन जाओ" में एक व्यक्ति ने उन्हें चीन के टापू के मिशन कम्पाउन्ड की ओर निर्देशित किया जहां एक मिशनरी ने उद्धार के मार्ग के बारे में वर्णन किया और उन्हें सुसमाचार की एक कॉपी दी। जैसे उन्होंने उसका अध्ययन किया। वे मरकुस 16:15 पर आये, "तुम सारे जगत में ज़ाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो"। यहां से उन्होंने समापन किया कि अन्त में कोई उनके पास सुसमाचार लेकर आयेगा। उन्होंने निश्चय किया कि जब परमेश्वर संदेशवाहक को भेजे, उन्हें उसे स्वीकार करने के लिये तैयार होना चाहिये।

वे अगले तीन वर्ष तक इन्तजार करते रहे। तब दो भिक्षु जो पहाड़ों पर कार्य कर रहे थे किसी को गाना गाते सुना। उन्होंने कहा, "केवल वे लोग जो परमेश्वर को जानते हैं वे ही गायेंगे"। जब एक व्यक्ति पहाड़ से उतरकर ग्लेडिस और डा॰ हुआंग से मिलने आये दूसरे अपने आश्रम को लौट गये। अपने साथी लामाओं को सतर्क करने कि लम्बे अरसे से इन्तज़ार करते हुए को स्वीकार करने के लिये तैयार रहें।

यही था कि ये दो मसीही क्यों इतनी गरम जोशी के साथ ग्रहण किये गये और ऐसे भूखे हृदयों से।

क्या कोई लामा का परिवर्तन हुआ? ग्लेडिस ऐलवार्ड बिना जाने लौट गई। वो केवल इतना जानती थी कि परमेश्वर ने उसे और डा॰ हुआंग को ईश्वरीय नियुक्ति में उन तक पहुंचाया और वह नतीजे को उस पर (प्रभु पर, छोड़कर सन्तुष्ट थी। ये शंका है कि उसने कुछ ऐसा प्रबन्ध किया होगा ऐसे उलझाने वाली परिस्थितियों अन्त में केवल निराशा देने की।

उस छोटी महिला ने प्रभु यीशु के समान अपने पूरे जाते विश्वास के साथ उसकी आज्ञाकारिता में सही किया और दूसरों के सामने प्रभु को

अंगीकार करके किया। उसने अपने जीवन के स्तर को जाल में फंसाया। उसकी सेवायें अलौकिक रूप से चमकीं। तब उसने दूसरों के जीवनों को छुआ, परमेश्वर के लिये कुछ हुआ।

चौबीस

अविश्वसनीय अनुग्रह[22]

मैं इस दम्पति का काल्पनिक नाम इसलिये दे रहा हूं जिससे जब कहानी आगे बढ़ती है तो स्पष्ट हो जाये। अरनी, अमरीका की सेना में एक अफसर था। अमेरिका के बड़े बेस पर उसकी नियुक्ति थी।

ऐलसी अपने बाहरी पेशे को छोड़ने में सन्तुष्ट थी। उसने महसूस किया कि उसकी बुलाहट घर पर रहने की और दो बच्चों को पालने की थी। सामान्य छोटी असहमति के बावजूद उनका प्रसन्न विवाहित जीवन था।

तब अरनी का जापान ट्रांस्फर कर दिया गया। ये ऐसा समय था जब परिवार माता–पिता के साथ जाने को स्वतंत्र नहीं थे। पर इस परिवार ने पत्रों के द्वारा करीबी सम्बन्ध बनाये रखा। ये सबसे उच्च समय था जब सप्ताह में "पिताजी" से पत्र आता था। बच्चे मां के पास फर्श पर बैठते जब उनके लिये पत्र को पढ़ा जाता था। ये खबर उनके बाकी दिन के लिये चर्चा का विषय बन जाता था। ऐसा लगता कि 'पापा' दूर नहीं है।

तो ये एक चितौनी का विषय था जब सप्ताह बिना पत्र के गुजर जाता, ऐल्सी की स्पष्ट कल्पनाएं थी। उसने अरनी की बीमार तस्वीर या दुर्घटना की बनाई या कुछ खतरनाक, गुप्त मिशन की। दो सप्ताह गुज़र गये और कोई पत्र नहीं था। यदि कोई दुर्घटना या बीमारी होती तो अब तक उसे पता लग गया होता। तीसरा सप्ताह – अभी पत्र नहीं–चौथा।

अन्त में एक पत्र आया और धक्का लगा। ऐल्सी का हाल ही का भय वास्तविकता में बदल गया। ये आश्चर्यजनक था। उसने इसके योग्य होने के लिये क्या किया? वह बहुत परेशान थी, इतना टूट गई थी कि बच्चों को बता नहीं सकती थी।

अन्त में बच्चों में से एक ने पूछा, "मम्मी, क्या परेशानी है?" क्या पापा को कुछ हुआ है? उन्होंने पत्र में क्या कहा है?"।

ये उन्हें बताना यातना देना था कि उनका पिता किसी दूसरी स्त्री के प्रेम में फंस गया है। उसने बच्चों के चेहरे पर घबराहट देखी। सही है वे उसे एकदम नहीं ले पाये – पर उन्होंने अहसास किया कि उनके पापा अब उनके पास कभी नहीं वापस आयेंगे। अन्त में, उनमें से एक ने कहा, "मम्मी, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूं?" "इसलिये कि पापा अब हमसे प्रेम नहीं करते हैं तो क्या इसका मतलब है हम उनसे प्यार नहीं कर सकते?"

ऐल्सी इस प्रश्न से स्तब्ध रह गई थी। इसने उसे भजन 8:2 स्मरण दिलाया, "बच्चों और दूध पिउओं के द्वारा सामर्थ की नेव डाली है"। उसके इस सूनेपन और दुःख में ये विचार कभी नहीं आया। प्रश्न के साथ संघर्ष करने के बाद उसने उत्तर दिया, "नहीं! हमें उससे प्रेम करने की अनुमति दी गई है"। पर उसके गले में एक रूकावट थी जब उसने ये कहा, उसके छोटे बेटे ने कहा, "ठीक है, क्या आप पापा को लिखोगी और उनसे कहोगी कि कृपा कर हमें पत्र लिखते रहें क्योंकि हम अभी भी उनसे प्रेम करते हैं?" इसका मतलब है कि उससे पत्र अभी भी आयेंगे।

जैसा उन्होंने किया उसकी अविश्वासयोग्यता खुल गई वह अपनी 15 वर्ष की नौकरानी के साथ प्रेम में फंस गया था। स्पष्ट है उसके इस विवाह से बहुत से बच्चे थे। ऐल्सी को अभी भी विश्वास करने में बड़ी कठिनाई हुई कि क्या हुआ था – पर वह अभी भी अपने सदमें से बाहर नहीं निकल पाई थी।

ये अरनी का पत्र था। "प्रिय ऐल्सी : मुझे लिखते हुए दुःख है कि मुझे कैंसर" बताया गया है और जीने का लम्बा समय नहीं है। मैंने अपनी

पैंशन छोड़ दिया है और हम जैसे--तैसे जी रहे हैं। मेरे मरने के बाद क्या तुम कुछ पैसा मेरे परिवार की सहायता के लिये भेज दोगी?"

इसे पढ़ने के बाद ऐल्सी ने अपने आप से कहा, "ठीक है, अब मैंने सब कुछ सुना है" वह उसकी कड़वाहट और हठ को विश्वास ना कर सकी। क्षमा याचना का एक शब्द नहीं। कोई अंगीकार नहीं या क्षमा याचना। ये बड़ी नासमझी थी।

पर और अधिक अच्छे विचारों में उसने जो उसके बेटे ने कहा याद किया, "मम्मी, इसीलिये कि पापा हमसे प्रेम अब नहीं करते क्या इसका मतलब है हम प्रेम नहीं कर सकते?" तो उसने वापस लिखा और वर्णन किया कि यद्यपि वह पैसे भेजने लायक नहीं होगी, पर कुछ वह अवश्य करेगी। उसने लिखा, "मैं तुमको बताऊंगी कि मैं क्या करूंगी" – क्यों नहीं तुम उन्हें अमेरिका आने का प्रबन्ध करते तुम्हारे चले जाने के बाद? वे इस घर में रह सकते हैं और मैं उन्हें सिखाऊंगी कि किस प्रकार अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं"।

और ऐसा ही हुआ। ऐल्सी ने बाद में वर्णन किया, "मेरे पास दो विकल्प थे, मैं पिछली बातों को देख सकती थी और उस व्यक्ति को श्राप दे सकती थी उसके लिये जो उसने मेरे साथ किया या मैं परमेश्वर का धन्यवाद करूं कि उसने मुझे ये सौभाग्य दिया कि मैं इस अन्धकारमय संसार में चमक सकूं"।

कोई शक नहीं, उसकी ज्योति को अन्धकारमय सुरंग में चमकाने में शामिल है इस गोद के लिये परिवार को सुसमाचार सुनाना जिससे वे भी प्रभु की ज्योति बन सकते।

आर्चबिशप टेम्पल ये कहने में सही थे, "बुराई के बदले बुराई लौटाना शैतानी है, भलाई के प्रति भलाई लौटाना मानवता है। बुराई के प्रति भलाई करना ईश्वरीय है"।

पच्चीस

उसने गरीबों से प्रेम किया[23]

जौन नेलसन डारबे चापलूस नहीं था, उसे धनी और प्रसिद्धों को अधिक नहीं कुछ उठाया। ये कुछ चरित्र से बाहर था क्योंकि उसका पालन पोषण एक धनी घर में हुआ था और वर्ग की संवेदनाशील समाज में। ये उसके लिये स्वाभाविक होता कि उच्च वर्ग के लोगों का पक्ष करें और उस जगह को चुनता जहां उसके आराम/सुख को अधिक किया जाता।

पर नहीं, उसने गरीबों से प्रेम किया और ये सत्य जाना कि किसी भी तरीके से जिसने लोगों के दिमाग में कोई शंका नहीं छोड़ी हैं। एक बार जब वह वचन की सेवा महाद्वीप में कर रहा था। वह रेल से एक नगर में आया। जहां उसे कई दिनों की आराधना सभा लेनी थी। मसीहियों की एक बड़ी भीड़ उससे मिलने स्टेशन पर इक्ट्ठा थी जिसमें नीले रक्त की महिलायें भी शामिल थीं जो आदर्णीय प्रचारक की आयोजक होने का सम्मान पाना चाहती थीं। यदि वह उनके सुख सुविधामय घरों में जाता तो वह वहां भोजन और सुविधा पाता। बदले में, वे अपने परिवार और मित्रों के आगे डींग मार सकते कि उन्होंने आदर्शीय मि॰ डारबे का मनोरंजन किया।

जे. एन.डी. ने भीड़ की ओर देखा और परिस्थिति को देखकर अगुवों से पूछा, "साधारणतः जो प्रचारक आता है उसकी देखभाल कौन करता है?" उन्होंने एक अनजान व्यक्ति की ओर संकेत किया। स्पष्ट है, उत्तम अर्थ है जो भीड़ के पीछे खड़ा था। डारबे उस व्यक्ति के पास गया और

पूछा कि क्या वह उसके घर पर रह सकता है। ये बिना आशा किये भाई आनन्दित हो गया और शीघ्रता से डारबे के बक्से को इक्ट्ठा करने लगा। जे.एन.डी के एक जीवनी लिखने वाले ने लिखा, "तो वो जो तुच्छ लोगों का मनोरंजन करता स्वयं एक महान व्यक्ति का आयोजक बन गया"।

डारबे ने अपने गरीबों के प्रति प्रेम का वर्णन किया।

> मसीह ने गरीबों से प्रेम किया, तब ही से मेरा जीवन परिवर्तित हो गया, वैसा ही मैंने किया। वे जो समाज को बेहतर समझते हैं, वे ऐसा करें। यदि कभी मैं उसने वहाँ और यदि उसने मेरा मार्ग लन्दन में पार कर दिया है, मैं हृदय में बीमार लौटता हूं, मैं गरीब के पास जाता हूं मैं ऐसा ही बुरा स्वाभाव धनी में पाता हूं, पर मैं ये फर्क पाता हूं, धनी, जो अपने सुख को और समाज को रखते हैं, उसका न्याय करते और मापते हैं वे कितना मसीह को बिना अपने समर्पण के उसे ले सकते हैं। गरीब कितना मसीह को पा सकते हैं अपने दुःख में तसल्ली देने को।

ये दिलचस्प है कि उसके 70 चेलों के प्रशिक्षत में, मसीह पहुंनाई के विषय को लाया।

> "जिस किसी घर में जाओ, पहले कहो, कि इस घर पर कल्याण हो। यदि वहां कोई कल्याण के योग्य होगा, तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास लौट आयेगा। उसी घर में रहो और जो कुछ उनसे मिले वहीं खाओ – पियो, क्योंकि मज़दूर को उसकी मज़दूरी मिलनी चाहिये। घर घर ना फिरना" (लूका 10:5–7)।

यहाँ वह ये सिखा रहा था कि उन्हें पहुंनाई स्वीकार करनी चाहिये जो उन्हें पेश की गई है। उस व्यक्ति के द्वारा जो शान्ति के सन्देश के लिये खुला है, पर उन्हें एक घर नहीं छोड़ना चाहिये और दूसरे की आशा बेहतर आराम और भोजन की करनी चाहिये।

ये असल में वही परिस्थिति नहीं है जो डारबे ने सामना किया। यहां उन्हें स्वीकार करना चाहिये जो उन्हें पेश किया गया था। वहां उन्होंने सही तरीके से पूछा कि गरीबों के साथ रहें पर सिद्धान्त तो एक सा ही है। उन्हें सुख–सुविधापूर्ण घर की खरीदारी नहीं करनी चाहिये इस आज्ञाओं पर ध्यान दो, "उसी घर में ठहरे रहो, घर घर ना जाना"।

छब्बीस

कलीसिया में नंगे पांव[24]

डेनिस डीहान अपनी प्रतिदिन की रोटी में लिखकर ये बताते हैं कि छोटा संकट जो फूट कर बड़ा बन जाता है, शहरी कलीसिया, एक रविवार को एक जवान मसीही पास के कॉलेज से अन्दर नंगे पांव आया, वह टी शर्ट और जीन्स पहने था। मन्डली आसानी से सरक गई। क्या उसे नहीं मालूम कि आप नंगे पैर कलीसिया में शामिल नहीं हो सकते? क्या वह नहीं देखता कि पुरुषों को सूट पहिनना चाहिये और वस्त्र में कमीज?

ठीक है, गिरजे में बैठने का पूरा स्थान भरा हुआ था तो "बिल" को घूम कर एकदम सामने जाना पड़ा। वहां भी कोई जगह खाली नहीं थी तो वह फर्श पर बैठ गया। बिल्कुल ठीक पुलपिट के सामने। ऐसा किसी ने भी पहले कभी नहीं किया था। ये दिन टूटती परम्परा का दिन था और ये कुछ पादरियों को नहीं सुहाया।

तब एक बुजुर्ग जोड़ों के दर्द से परेशान सीनियर ने दूसरी परम्परा तोड़ दी। अपनी छड़ी लेकर वह सामने आ गया। अब क्या होने जा रहा था? अपनी छड़ी गिराकर वह पीड़ा से कराहकर झुका और बिल के बगल में बैठ गया। वह नहीं चाहता था कि ये जवान अपने को अकेला या अनचाहा समझे।

ये मुझे इसी प्रकार की घटना स्मरण दिलाती है, जो एक चैपल में घटी, मेरे घर से दूर नहीं थी। ये हिप्पियों के दिनों की बात थी, फूल जैसे

बच्चे, प्रेमी पीढ़ी एक नया विश्वासी प्रभु भोज की शाम नंगे पैर आया। बहुतों ने उस पर ध्यान नहीं दिया पर एक बुजुर्ग ने महसूस किया कि मीटिंग के बाद उसे सीधे बाहर करें बुजुर्ग ने देखा कि क्या हो रहा है जब महिला ने अपना सन्देश समाप्त किया। वह आगे गया और जवान को बांहों में लेकर कहा, "कोई बात नहीं मैं सोचता हूं ये सुन्दर है, "उसने उत्तर दिया, "ठीक है ये असली हैं"।

उस आर्थराइटिस वाले बुजुर्ग के लिये अत्याधिक सम्मान और उसे तरस से भर जाने वाले वृद्ध के लिये, हर विश्वासियों के लिये अत्याधिक आदर/सम्मान जो बाहरी चीज़ देख सकते और हृदय को पहचान सकते जो प्रभु यीशु को प्रेम करता है। आलोचना उन्हें केवल बाहर ले जायेगी – प्रेम बढ़ने में सहायता करेगा। मसीह के समान की आत्मा कहती है, "उन्हें मुझ तक आने की अनुमति दो"।

सत्ताईस

अमाजोन के ऊपर मार गिराया

जिम और रोनी बोर्क्स कोलम्बिया की लेटीशिया अम्बेसी में पेरू के वीज़ा के लिये अपनी गोद ली हुई बेटी (सात महीने की) चेरीटी के लिये गये थे। अब वे अपनी हाउसबोट इक्वेटोर पेरू में वापस उड़ान भर रहे थे अपने मिशन के सेना तैरते जहाज़ में। पायलेट उनका मिशनरी साथी था और करीबी मित्र। केविन डोनेल्डसन – इसकी साथी पिछली खिड़की पर कोरी बोवर्स थी (सात) पेरू की धरती से मोहित हो गये थे।

शीघ्र ही केविन और जिम ने नोटिस किया कि पेरूवियन हवाई सेना का जहाज उनका पीछा कर रहा है। उन्होंने नहीं देखा कि दूसरा जेट सी. आई.ए. क्रू लड़ाकू के साथ सहयोग कर रहा था – उस क्षेत्र में "ड्रग" की तस्करी को रोकने के लिये। सी.आई.ए. ये दावा करता है कि उन्होंने पेरुवियन पायलेट को सलाह दी है कि गोली चलाने के पहले कसीना की पूरी जांच कर ले, पर ये काफी देर हो चुकी थी।

एक गोली रोनी की पीठ को छिलकर निकल गई तब चेरिटी के सिर में, जो रोनी की गोद में थी। वे दोनों उसी स्थान पर मर गये। दूसरी गोली पायलेट के दाहिने पैर में लगी और दूसरी ने तेल की टंकी को छेद दिया, जहाज को आग लग गई थी। जिम केविन की आग बुझा सका था और केविन ने आश्चर्यजनक रूप से जलते हुए जहाज को अमाजोन की

सीमा पर उतार दिया। लड़ाकू विमान लगातार मिशनरियों पर गोली दाग रहा था जबकि जहाज नीचे आ गया था।

इस समय तक जहाज से लपटें उठ रही थीं। जिम फिर भी अपनी पत्नी और बच्ची की लाश को (रोनी और चेरिटी की) पानी में निकालने योग्य हुआ। वह बिल्कुल शान्त रहा इस तमाम हादसे के बाद।

केविन कोरी के साथ अपनी पीठ पर तैरता रहा जबकि जिम जलते जहाज से दूर रोनी और चेरिटी की लाशों को खींचता आया। उसने उनके चेहरों को नीचे कर दिया था जिससे वह अपनी मृतक मां और बहन को ना देख सके। जहाज की आग बुझाते हुए काफी डूब गया। केविन और जिम वापस तैर सके और एक फट्टे पर चिपक कर तैरते रहे।

शीघ्र ही उनकी सहायता के लिये बहुत से लोग मोटर टोटस से आ गये।

पेरुवियन अधिकारी और सी.आई.ए. की निगरानी करने वाले क्रू एकदम एक दूसरे पर व्यर्थ की हत्या के लिये दोष देने लेगे। इस मारने का विरोधाभास में जिम बोवर्स केबिन डोलाडसन और यू.एस के मिशन मुख्यालय का व्यवहार मसीह के समान था। कोई उंगली दोष लगाने को नहीं उठी, कोई कानूनी कार्यवाही की बात नहीं उठी। इसके विपरीत बार बार दुहराई जाने वाली गवाहियां प्रभु पर विश्वास की और उसे समर्पण की थी।

बावर्स ने बाद में कहा, "हमारा रवैया उनके प्रति जो जिम्मेवार हैं क्षमा का है। क्या ये अद्‌भुत नहीं है? ये हम मसीहियों के लिये आश्चर्य नहीं है, मैं उनके लिये प्रार्थना (पायलेट के लिये) कर रहा था, मैंने इसके विषय में उनके सुपरवाइजर से बातें कीं। वह अत्याधिक इच्छुक है प्रभु के विषय जानने के लिये। मैंने उससे यहां से बातें की हैं (घर से)। इस तरह सब सही चल रहा है। "कोई कठोर भावना नहीं"।

उसके इस छितराने वाली हानि के बावजूद, उसने कहा, "दोनों, मैं और कोरी अद्‌भुत लाजवाब शान्ति का अनुभव कर रहे हैं", न्यूज़ वीक पत्रिका ने अपनी टिप्पणी दी, "कुछ ही के पास ऐसे अकेले दिमाग का विश्वास होता है"।

अपनी विश्वासयोग्य पत्नी और बेबी पुत्री की यादगार सभा में, जिम बारिश के बीच से सूर्य की किरण को देख सका, उसने आश्चर्यकर्म की श्रृंखला में परमेश्वर के हाथ को देखा, जिसने उस टूटे हृदय के दिन स्थान लिया।

गोलियों की वर्षा जिसने केबिन को छेद दिया ना सिर्फ कोरी या स्वयं को इस तथ्य के अलावा एक उसके पीछे से आई। जिसने विन्डशील्ड में छेद ठीक उसके सामने जहां वह बैठा था।

आग बुझाने वाले ने बहुत अच्छा कार्य किया थोड़े समय के लिये, उसके अनुभव के विपरीत उनके साथ, वह आश्चर्य में पड़ गया था।

वह गोली जिसने रोनी को और चेरिटी को मार डाला था नहीं रूकी थी जहां इसने ये किया, शायद ये पायलेट को मार डालती और उस हालत में सभी जो जहाज में थे नष्ट हो जाते।

ना कोरी और ना वह भयभीत थे। कोई चिल्लाना नहीं था ना चीखना था। उन्होंने मसीह की शान्ति का अनुभव किया जो ज्ञान से परे है, और वे इस योग्य थे कि साफ सोच सकते थे और शीघ्र प्रतिक्रिया कर सकते थे।

पायलेट को उसके पैरों की आवश्यकता होती है कि कैसना को भूमि पर उतार सके। केविन के गम्भीर पैर की चोट के बावजूद, केविन जहाज को पानी में सुरक्षित उतार सका, यद्यपि जब जहाज में गोली मारी गई तो ये लम्बा रास्ता था। केविन जानता था कि ये प्रभु है जिसने जहाज को पानी पर उतारा।

जिम के पास काफी शक्ति थी कि रोनी और चेरीटी की लाशों को जहाज से बाहर निकाले, जहाज के भले ही जल रहा था। वह आश्चर्य करता है कि उसे आग की गरमाहट नहीं महसूस हुई। ये ठन्डा था। उसका अनुभव दिखाता है कि आग के भट्टे में तीन इब्रानी थे (दानिय्येल 3:27)।

जब जहाज आग बुझाने के लिये काफी डूब गया था, केविन, कोरी और जिम एक लकड़ी के तख्ते को पकड़ने योग्य थे और तैरते रहे।

एक मोटर बोट आई, ठीक उस समय जब केविन और जिम अपनी शक्ति खो रहे थे कि तैरते रहे कोरी और दो लाशों के साथ।

जब उन्हें मारकर नीचे उस नगर में गिराया गया वहां जिम कुछ लोगों को जानता था। इन लोगों ने देखा कि क्या हुआ था और एक रेडियों सहायता के लिये बुलाने को था। इस विशेष रेडियों ने काम किया।

जब जिम ने केविन की पत्नी को बुलाने के लिये रेडियों का इस्तेमाल किया, वह घर पर थी एक पायलेट मित्र उपलब्ध था कि उड़कर केविन को मेडिकल सहायता दिला सके।

कोरी और जिम ने अलौकिक शान्ति का अनुभव किया स्पष्ट है परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं के उत्तर में थी। कुछ लोगों ने जिम को बताया ये पूरा नहीं पड़ेगा पर उसे भरोसा था कि रहेगा।

एक अन्तिम आश्चर्य, बोवर्स, डोनलडसन्स और सभी मसीही जो भी किसी तरह संलग्न थे वे उनके प्रति जो इस दर्दनाक घटना के प्रति जिम्मेवार थे क्षमा के व्यवहार में थे। ये परमेश्वर का प्रेम था जो उनके हृदय में बहाया गया था।

रोनी और चेरिटी व्यर्थ में नहीं मरे थे। उनकी मृत्यु ने मिशनरी कार्य में एक नई रूचि पैदा कर दी थी। लोगों को महान आदेश के उत्तर में जाने के लिये चुनौती दी गई थी, जिम ने कहा, "मैं सोचता हूं वह सोते हुए मसीहियों को जगाना चाहता है, जिसमें मैं भी शामिल हूं और हो सकता है हम में से सब, उन्हें भी जिन्हें कोई रूचिं नहीं या परमेश्वर में थोड़ी रूचि है जागना होगा"।

अन्त में, परमेश्वर ने कोरी के जीवन की बढ़ौतरी की, उसे आगे सुअवसर दिया कि प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करें।

जैसे समय गुजरता जाता है, ये अधिक अधिक स्पष्ट होता है कि संसार ने एक स्पष्ट प्रगटीकरण देखा है उस सत्य का कि मसीही लोग भिन्न हैं। एक प्राइम टाइम न्यूज पत्रिका ने कुछ पूरा बयान इसे मार गिराये जाने को मई 24, 2001 में दिया था। उस कार्यक्रम में "डायने सोयर" ने इस घटना को कहा, "मानव प्रेम और यातना की कहानी और पूरी विश्वास की जिसे हममें से अधिकतर दूर से देख सकते हैं"।

अट्ठाईस

लोईस और सफाई अभियन्ता[25]

लुईस पक्का घर बनाने वाली थी। वह बाइबल आधारित रूप रेखा में एक मसीही पत्नी और मां के रूप में फिट थी। उसका सबसे बड़ा आनन्द उसके सात बच्चों को परमेश्वर के लिये पोषण करना था। दूसरा उसके पति की सहायता करना जब वह दूर दूर यात्रा कर प्रभु के लिये अथक प्रयास करता था। यहां एक उदाहरण है। एक बार जब वह कान्फरेन्स में बोल रहा था। न्यूजर्सी में – उसने ये याद किया कि ये उसका जन्म दिन था। पति ने फोन करके बताया कि उसे दुःख है कि वो इस समय उसके साथ नहीं हो सकेगा और इनाम नहीं दे सका है। बिना हिचकिचाहट के उसने कहा, "तुम इससे अच्छा दान नहीं दे सकते उस दान की अपेक्षा जो आज जहां परमेश्वर ने तुम्हें रखा है और वह कर रहे हो जो परमेश्वर चाहता है कि करो"।

इसके अलावा लुईस में कुछ था। उसकी व्यस्त दिनचर्या उसे आत्मा जीतने से नहीं रोक सकी। वह अक्सर पड़ोस की महिलाओं को कॉफी के समय बाइबल अध्ययन के लिये ले जाती। पर थोड़े समय बाद ये सबूत बन गया कि वे अपने ही धर्म से सन्तुष्ट थीं। उनको थोड़ी दिलचस्पी प्रभु के साथ सम्बन्ध रखने में थी।

एक प्रातः काल लुईस अपने कमरे में प्रार्थना कर रही थी, उसने लूका 14 के महान भोज को स्मरण किया। वहां जितने आमंत्रित किये गये

थे उन्होंने भिन्न भिन्न बहाने बनाये, तो घर के स्वामी ने सड़कों और बाजारों से लोगों को लाने का आदेश दिया।

लुईस ने इसे प्रार्थना में लिया, "प्रभु एक जिसको मैंने आमंत्रित किया है उसने भी बहाने बनाये हैं, मैं तुम्हारे लिए उन दूसरों के पास जाने को तैयार हूं पर मैं यहां अपने बच्चों के साथ हूं। यदि आप किसी को मेरे पास हाईवे या बाई वे से भेजें तो मैं आपके भोज में उन्हें निमंत्रित करूंगा"।

ठीक उसी समय उसने कूड़ा उठाने वाले ट्रक का हॉर्न सुना, अहा! ये ड्राइवर हाईवे और बाई वे से है। उसने खिड़की के बाहर देखा और आदमी को देखा, अब सलोनी भाषा में सफाई इंजीनियर को बुलाया, पड़ोसी के कूड़ादान को उठाकर खाली किया (ट्रक में)। ये स्पष्ट था उसके शरीर में ऐंठन आ गई थी वह उस पीड़ा को कम करने का प्रयास कर रहा था।

लुईस बगल ही में खड़ी थी जब ट्रक ने लुईस के घर पर से कूड़ा उठाया – जैसे ही ड्राइवर ने घर में कदम रखा लुईस ने उससे पूछा कि क्या उसके पीठ में दर्द है। नहीं! उसने जवाब दिया, "एक बुरी हृदय पीड़ा"।

तो फिर पूरे दिन क्यों ये भारी कूड़ा के डिब्बा उठा रहे हो? लुईस ने पूछा, "यहां मैं अपना फेंक दूंगी" और उसने डिब्बा लिया और उसका कूड़ा उसने ट्रक में डाल दिया।

ड्राइवर ने कहा, "मैं केवल यहीं काम पा सकता हूं"।

"ठीक है मैं प्रार्थना करूंगी कि आपको बेहतर नौकरी या बेहतर हृदय मिले"।

रेग ने उदास होकर कहा, "कोई कूड़ा वाले व्यक्ति की चिन्ता नहीं करता"।

"परमेश्वर करता है", लुईस ने कहा।

रेग ट्रक में बैठज्ञ और चला गया।

एक सप्ताह बाद, लुईस ट्रक का इन्तजार कर रही थी जब ट्रक आया। इससे पहले कि रेग कूड़े वाले ट्रक के अन्दर गया। उसने उसकी तरफ देखा और पूछा, "क्या आपने मेरे लिये प्रार्थना की?"

"प्रतिदिन"।

यद्यपि रेग ने विश्वास नहीं किया फिर भी उसने अपने शक को नहीं बताया।

लोइस लगातार, "सुनती रही"। बाइबल कहती है विश्वास बिना कर्म के मृतक है। मैं प्रार्थना कर रहा हूं पर आपको दूसरी नौकरी ढूंढना होगी"। उसने सिर हिलाया, कुछ कहा नहीं, और आगे बढ़ता गया।

दूसरी सड़क पर, उसने मोइरा को देखा, लोइस का दूसरा स्तर जो स्कूल के रास्ते पर थी, जैसे ही ट्रक उसके पास रूक गया, उसने पुकारा, "हे, हम घर में आपके लिये प्रार्थना करते हैं"। तब रेग ने जाना कि कोई तो है जो कूड़ा उठाने वाले व्यक्ति की चिन्ता करता है।

एक सप्ताह के बाद, लुईस गोलचक्र पर इन्तजार करती थी, रेग ने कहा, "श्रीमती निकोलसन, मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूं, स्वर्ग, नरक और उन सब पर एक दूसरा कदम होना चाहिये, क्या कोई दूसरा कदम है?"।

सावधानी से लोईस ने परमेश्वर ने उद्धार का रास्ता उसके लिये और विश्वास के कदम के महत्व बयान किया। उसने ध्यान सें सुना, तब एक मुस्कुराहट के साथ हाथ हिलाते हुए वह चला गया। उसने उसे बुलाया, "उस नौकरी के विषय में निश्चिंत रहो और उसके लिये आवेदन डालो"।

दूसरे सप्ताह के लिये निकलसन ने रेग के लिये बिना रूके प्रार्थना की। कूड़ा जमा करने के दिन लोईस चक्र के पास अपने स्थान पर थी, रेग पूरी मुस्कुराहट के साथ जब वह ट्रक से नीचे कूदा और कहा, "ठीक है मैंने किया है"।

"किया क्या"? क्या इसका अर्थ है कि उसने दूसरी नौकरी के लिये आवेदन पत्र डाला?

"मैंने कदम उठाया, श्रीमती निकोलसन" उसने बताया कि उसने अपना भरोसा प्रभु यीशु पर रखा। क्या ये सच था? क्या वास्तव में उसका उद्धार हो गया है? लेईस ने सोचा, ठीक है, चाहे ये सत्य है या नहीं, उसे

बाइबल पढ़ना चाहिये। क्योंकि विश्वास परमेश्वर के वचन सुनने के द्वारा आता है। "रेग, तुम्हें बाइबल पढ़ना आरम्भ करना चाहिये, ये आत्मा के भोजन की तरह है"।

"आह, श्रीमती निकोलसन, ये आपको मुझे पहले बताना चाहिये था, कि जो एक मसीही को करना है, मुझे दुःख है, मैं पाठक नहीं हूं, मैं अखबार भी नहीं पढ़ता। क्षमा करें", और वह दूसरे घर की ओर सड़क से आगे चल दिया।

दूसरे कोने के चारों ओर उसने एक भारी बक्सा उठाने के लिये देखा। उसकी उत्सुकता हुई उसमें झांकने की। उसके ऊपर बिल्कुल नई बाइबल थी, अभी अभी एक स्पष्ट प्लास्टिक में लिपटी हुई, "ठीक है, प्रभु, मैं आपकी पुस्तक पढ़ूंगा"।

वह ना केवल बाइबल पढ़ने लगा, वह चर्च भी गया जहां निकोलसन की संगति थी। उसने अपने आपको लाल सूट में दिखाया – ट्रेश कम्पनी के चिन्ह के साथ, जो सामने लगा था। ये सबसे उत्तम जो उसके पास था। यहां वह प्रथम पंक्ति में था एक बच्चे की तरह दांत दिखा रहा था। उसके लिये सब कुछ सही था, गीतों का गाना, प्रचार, लोगों से मित्रता का व्यवहार, जब किसी ने उससे पूछा, कि वह मंगलवार को क्यों प्रार्थना–आराधना में आया और दूसरी प्रार्थना सभा जो पास की मंडली में बुधवार को थी, उसने कहा, "मुझे दोहरा समय करना है, मुझे बहुत सा पाना है"।

उसके परिवर्तन के थोड़े समय बाद रेग का बपतिस्मा हो गया। प्रभु ने उसे उसकी शराब की आदत पर विजय दिया। वह ना केवल विश्वास योग्यता से सभाओं में गया पर वह अपने मित्रों को सुसमाचार सुनाने ले आया। उसने पहले ही दिन से अपने उद्धार का आनन्द लिया।

उसके हृदय का सुधार नहीं हुआ, पर कई वर्षों के लिये कम श्रम करने वाली नौकरी उसने पा ली, तब प्रभु ने उसे अपने घर बुला लिया, मसीह में एक अत्यन्त प्रेमी भाई जिसे हाई–वे और बाई–वे से बुलाया गया और उसे महान भोज में आने को मजबूर किया।

और . . . क्यों कि एक वफादार गृहिणी प्रार्थना की, "प्रभु मुझे इस्तेमाल करो"।

उन्नतीस

ये सब बनाने में समय असफल होगा

प्रतिदिन पूरे संसार में ऐसे मसीही हैं जो ये दिखा रहे हैं कि यीशु किस तरह दिखता है। "उसके प्रतिरूप को उसकी देहों के रूप में नहीं देखा गया पर नई बुद्धि की सुन्दरता में और हृदय, पवित्रता, प्रेम, मानवता, दया और क्षमा के सब ईश्वरीय चरित्र का निर्माण करते हैं"।[26]

मैंने उद्धारकर्ता को पहुंनाई के जीवन में पुनः उत्पन्न करते देखा है। कितना मेरे आयोजक वा आयोजिका ने मुख्य सोने के कमरे को और स्नागार को मेरे लिये दे दिया। जबकि वे कहीं और सोये। एक सुअवसर पर ये कॉन्फरेन्स का समय था और एक परिवार के पास 16 मेहमान थे उनके छोटे धन के नीचे। माता–पिता और तीन बच्चे गैराज़ में सोये। तायवान में एक मिशनरी फर्श पर आग के पास सोया जबकि मैं उसके बिस्तर पर सोया। उसने अपनी महिमा ये आग्रह करते हुए बहाई कि उसके पास एक गर्म सोने की जगह है जो मेरे पास नहीं है। उसने हर मेहमानों के साथ ऐसा व्यवहार किया मानो वे मसीह हैं। एक बहस कालारोड़ा में एक कार दुर्घटना में थी – सुबह की आराधना में जाने के रास्ते में। उसकी चोट को तुरन्त ऑपरेशन की आवश्यकता थी। जब उसे होश आया उसके पहले शब्द ये थे, "मेहमानों के लिये रात्रि भोज कौन बना रहा है?"

जब हम यीशु की दया को सोचते हैं तो हमारा दिमाग उसके छोटे बच्चों की ओर जाता है। चेलों के लिये, वे ध्यान भटकाने वाले थे और

शायद बेकार थे। पर प्रभु यीशु के लिये नहीं। उसके लिये वे परमेश्वर के राज्य के लिये सही लोग थे। मैंने अक्सर शंका की कि वह बड़े लोगों की अपेक्षा बच्चों के साथ अधिक आसानी महसूस करता था।

साधु सुन्दर सिंह ने प्रभु का नमूना दिखाया। अक्सर जब वह किसी के घर पर मेहमान होता, वह फर्श पर उतरकर बच्चों के साथ खेलता। एक रात बच्चों ने पूछा, "माँ, क्या यीशु हमें पलंग पर आज रात रखेगा", उन्होंने यीशु को साधु में देखा था।

दूसरी घटना इसी प्रकार की कहानी बताती है। एक व्यक्ति लापरवाही से एक छोटे लड़के से टकरा गया, जिसकी बाहों में कुछ बंडल थे, और उसे डांट लगा दी मानो ये लड़के की गलती है। दूसरे पास से गुजरते हुए ने देखा कि क्या हुआ, बंडलों को उठाने में सहायता की और लड़के को दिया और साथ में एक डॉलर भी दिया। ये कहते हुए कि "मुझे आशा है कि ये जो कुछ हुआ है उसकी कीमत कुछ मिल जाये"। उस बच्चे के लिये वह अनजान था उस कृपा/दया को देखते हुए, उसने पूछा, "सर, क्या आप यीशु हो?" "नहीं" उस मसीही ने उत्तर दिया, "पर मैं उसका एक अनुयायी हूँ"।

दूसरे विश्वासी मसीही की तरह अपने छेड़छाड़ के विरोध में प्रगट करते हैं। एक मिशनरी क्वीटों में एक दुर्घटना में शामिल था। एक स्त्री दाहिनी ओर से बाईं ओर लेन पर मुड़ी तो कार की साइड उसे लग गई। जब वे कार से बाहर आये, वह उन पर चीखी, उसकी जाति और देश का अपमान किया और उसके मुंह पर थप्पड़ जड़ दिया। जैसे ही वह अपनी कार पर वापस आया तो उसने प्रभु को आत्मा के फल 'संयम' के लिये धन्यवाद दिया, उसने कहा, "जब केवल थोड़ी सी हानि हुई है मेरी कार की मुझे मानना होगा कि आने वाले कुछ दिनों के लिये, मैंने अपने आपको आश्चर्य में पाया कि मैंने कैसे प्रतिक्रिया की यदि प्रभु मेरे साथ न होता"।

डा॰ आयडा स्कडर भारत में कई वर्षों तक एक मिशनरी थी। जिसके पास विरोध ना करने वाली आत्मा थी। एक बार एक मुस्लिम ने उससे पूछा कि ये ऐसा क्यों था। इससे पहले कि वह उत्तर देती, एक हिन्दु, मित्र, जो

डा॰ स्कडर को जानता था, ने उत्तर उपलब्ध किया, "क्या आप नहीं जानते क्यों? ये इसलिये है कि डा॰ स्कडर का परमेश्वर धीरजवन्त हैं और प्रेमी है और वह अपने परमेश्वर की तरह है"।

हम प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं उसकी दया और निम्न स्तर के लोगों के लिये तरस के लिये और हम ये उसके लोगों में ये प्रेम देखने से प्रसन्न होते हैं। येल का बोर्डन का पालन पोषण धनी और सुख–विलास वाले घर में हुआ था, कभी कभी उसे स्किड रो मिशन में बर्तन धोते पाया गया। जब एक ब्रिटिश सुसमाचार प्रचार करने वाला घर वापस आ रहा था, किसी ने उससे पूछा, "अमेरिका में किस चीज़ ने सबसे अधिक प्रभावित किया?" उसने उत्तर दिया, "विलियम बोर्डन को देखकर कि लखपति का पुत्र अपनी बाहें शहर के मिशन में अपने कूल्हों पर देखकर"।

पौल सैन्डबर्ग दूसरा था जो अपने स्वामी के पीछे व्यर्थ नहीं हो लिया। एक दिन वह कॉफी दुकान में प्रविष्ट हुआ, एक स्टूल पर बैठ गया और एक व्यक्ति के साथ वार्तालाप में उलझ गया जो उसके बगल में था। पॉल एक मशहूर गायक ने विश्वासयोग्यता के साथ फ्रेड को गवाही दी और अन्त में उसे प्रभु के पास लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ सप्ताहों के बाद, फ्रेड कैंसर के रोग से पीड़ित हो गया। पॉल ने लगातार उससे एक निचले स्तर के नर्सिंग होम में मुलाकात की, अपनी डयूटी करता रहा, जिसे सहायक नर्स को करना चाहिये था। जिस रात फ्रेड मर गया, पॉल उसे अपनी बांहों में पकड़े हुए था और धर्मशास्त्र के पदों का संदर्भ दे रहा था। मैं इसे तरस कहता हूं।

जब जापान के एक छोटी संगति ने ये निर्णय किया कि एक चैपल बनाये, वे आस–पास के सभी पड़ोसियों के पास गये। इस योजना से कि कोई यदि इसका विरोध करता है, किसी ने नहीं किया, पर जब वास्तविक कार्य आरम्भ हुआ। उन्होंने सुना कि वहां एक व्यक्ति है जो डरा हुआ था कि चैपल से उसके बरामदे में धूप रुक जायेगी।

आरम्भ में मसीहियों ने उसके शीघ्र विरोध ना करने पर उसकी गलती नहीं पाई। इसके बदले उन्होंने आर्किटेट को पुनः योजना बनाने

के लिये पैसे दिये और कि छत नीचे रखें। पड़ोसी प्रसन्न वा परेशान था; प्रसन्न इसलिये कि वह धूप पायेगा और परेशान मसीहियों के दयामय आत्मा के प्रति।

यदि हम प्रभु यीशु की नाईं हैं तो हम लोगों के प्रति प्रेम और ध्यान उनकी जीवन की हर परिस्थिति में देखते हैं। ये इलियट परिवार में नाश्ते की मेज़ पर प्रार्थना/मनन करना एक परम्परा थी। एक सुबह जब पिता दूसरों के लिये बाइबल पढ़ रहा था, उसने कूड़े के डिब्बों की खड़खड़ाहट बाहर बरामदे में सुनी। शीघ्र ही उसने बाइबल एक तरफ रख दिया, खिड़की खोली और कूड़ा बटोरने वाले को जोर का अभिनन्दन किया। उसके लिये कोई गतिविधि एक दूसरे से अधिक पवित्र नहीं थी। उसने पवित्र और संसारिकता में कोई फर्क नहीं किया।

मसीह जीवन के हर क्षेत्र में आदर्श है। एक व्यापारी ने एक मसीही प्रतिस्पधी (मुकाबला करने वाला) के विषय में कहा, "तुम्हें लिखित ठेके की आवश्यकता नहीं है जब आप उसके साथ निपटते हो। उसके शब्द ही काफी हैं" उस ठेकेदार ने कभी भी अपने ग्राहकों के साथ इकरारनामा कभी नहीं लिखा।

फुटबाल के रेफरी ने कहा, "मैं जिस मैंच में रेफरशिप कर रहा था। जिसमें टौमी वाकर खेल रहा था, मुझे 21 खिलाड़ियों ही को देखना था, 22 नहीं टोमी कभी नियम नहीं तोड़ेगा।

जब एक कर विशेषज्ञ ने अपने ग्राहक को बताया कि अपनी बड़ी आय की घोषणा ना करना ये कल्पना करते हुए कि सरकार कभी जान नहीं पायेगी, मसीही ने कहा, "मुझे घोषित करना चाहिये, मैं एक मसीही हूं"। उसके विश्वास ने उसकी आर्थिक स्थिति को प्रभावित किया।

उसके उद्धार पाने के थोड़े समय बाद एक इस्तेमाल की गई कार के सेल्समैन ने भावी ग्राहक को बताया, "इसमें मेरे पास कुछ नहीं है जो मैं आपको बेचूं"। ये विचित्र सेल्समेनशिप इस्तेमाल कार के झुण्ड में ना हो।

एक मसीही डॉक्टर ने एक मरीज़ के लिये झूठा बीमा के दावे में

हस्ताक्षर करने से मना कर दिया और अपने ऊपर अत्याधिक निन्दा ले ली। एक मिशनरी का सामान कस्टम में रोक लिया गया था इसलिये कि ऐजेन्ट घूस मांग रहा था और मिशनरी उसे नहीं अदा कर सकता था।

एक विश्वासी के मौखिक सहमति के बाद कि अपने घर को बेच कर डॉलर 250,000/– में दूसरा भविष्य का खरीददार आकर 265,000/– डॉलर ऑफर करता है, तो वह क्या करें? उत्तर भजन 15:4 में है, "व्यक्ति जो परमेश्वर के साथ रहता है, "जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे उसे हानि उठाना पड़े"। 15,000 डॉलर खोना बेहतर है अपेक्षाकृत आप अपनी प्रतिष्ठा खोओ। जो धर्म आपका रविवार का है तो सोमवार के धर्म से बेहतर उसी पर बने रहना अच्छा है।

कभी कभी हम मसीह की समानता उनमें देखते हैं जो परीक्षा में विजय पाते हैं। एक मसीही दम्पति के अन्त में वर्षों इन्तजार करके एक बच्चा उत्पन्न हुआ। दुःख की बात है कि बच्चा ऑक्सीजन की कमी के कारण मर गया – कुछ महीनों बाद। सेवक ने कहा, "जिसने मुझे चुनौती दी और मुझे घुमा दिया, वह कलीसिया के एक गाने ने जिसने परमेश्वर की महानता का वर्णन किया है, एक चट्टान, मैंने स्त्री को उसके पति के साथ खड़े देखा, उसकी आंखों से आंखू बह रहे थे पर उसका चेहरा चमक रहा था और परमेश्वर की ओर उठा हुआ था और वह गा रही थीः–

परमेश्वर की महानता चट्टान की नाईं बयान करो
कार्य उसके सिद्ध हैं और हर मार्ग न्यायपूर्ण हैं
विश्वासयोग्यता का परमेश्वर और अन्याय के बिना
वह भला और सर्वदा अच्छा है।

मुझे भी वेरेवली वेस्ट की याद दिलाई गई। डॉक्टर ने उसे बताया कि उसे असाध्य कैंसर है। और ठीक उसी समय उसने सुना कि गैरी विलसन अस्पताल में है और गम्भीर पेन्क्रियास की सूजन के साथ। तो वह बैठ गई और ये लिखाः–

हमारे प्रिय गैरी, बैथ और परिवार हम चाहते हैं कि आप जान लें कि आप हमारी प्रतिदिन की प्रार्थना में हैं और पूरे दिन। काश! आप उन अनन्त बाहों के सुख को जो आपके चारों ओर हैं जानो, आप उसकी सामर्थ और अनुग्रह से उठाये हुए हो।

जब से मुझे असाध्य कैंसर बताया गया है और अब मैं केमो पर हूं, मेरे पास प्रार्थना के लिये काफी समय है आप उस सूचि में सबसे ऊपर हो।

ऐमी कारमाइकल, चांदनी रात में सोने में, मैं विश्वास करता हूं, ये संकेत दिया गया है कि फिलिप्पियों 3:10, "दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं और उसकी मृत्यु को समानता को प्राप्त करूं"। काश! कि हम मसीही को इसी तरह से जानें। ये समझने का सौभाग्य है कि गेतसेमनी की थोड़ी सी संगति और क्रूस और उसकी सामर्थ से कहने योग्य हों, "मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो"।

उसके प्रेम के बन्धन में,
जौन और बेवरली,

एक हल्के लेख में, जब एक डॉक्टर ने एक मसीही को बताया कि उसकी एक आंख को निकाला जाना है और उसकी जगह एक कांच की आंख रखी जायेगी, उसने कहा, "डॉक्टर कृपाकर, उसमें झपकना भी रख देना"। वह मित्र समर्पण के द्वारा विजय है।

किसी ने लिखा है, "ये बढ़ाने का सोचना कैसा है कि हम मसीह की योग्यताओं का आदर्श बना सकते हैं उनके लिये जो उसको खोजते हैं। एक आदर्शमय जीवन शैली के द्वारा उसके चेले उसके प्रभु को दूसरों के लिये आकर्षित बना सकते हैं। अपने तीतुस की पत्री में पौलुस ने आग्रह किया कि अपने स्वामियों को प्रसन्न करना स्वयं को सिखाओ, जिससे हर तरीके से उस शिक्षा को परमेश्वर और उद्धारकर्ता के विषय शिक्षा आकर्षित करेंगे (तीतुस 2:10)। लोगों को केवल सत्य ही नहीं सुनना है पर सत्य को अनुसरण करता देखें"।

तीस

औसत से ऊपर जीना

मेचेलेनजियों अपने स्टूडियों में खामोशी से खड़ा था, वह संगमरमर के एक ब्लॉक को टकटकी लगाकर देख रहा था। अन्त में उसके एक साथी ने इस चुप्पी को तोड़ा ये पूछते हुए कि वह क्यों इतनी देर तक उस उबड़–खाबड चट्टान को देखकर समय खराब कर रहा है। मेचेलेनाजियों का चेहरा खिल गया, उसने जोश से कहा, "यहां इस चट्टान में एक स्वर्गदूत है और मैं उसे स्वतंत्र करने जा रहा हूँ"।

यहां पर आत्मिक सन्तुलन है। मसीह हर परमेश्वर के सन्तान में रहता है पौलुस प्रेरित ने कुलुस्सीवासियों से कहा, "आशा की महिमा मसीह तुम में है (कुलुस्सियों 1:27)। गलातियों 2:20 में उसने स्पष्ट किया कि मसीह विश्वासियों में रहता है पर संसार उसे नहीं देख सकता। जब तक वह स्वतंत्र ना किया गया है। ये उस समय होता है जब हम मसीही ईश्वरीय जीवन द्वारा प्रगट करते हैं। ये उस समय होता है जब हम बोलते और कार्य करते जैसा प्रभु करता है। ये उस समय होता है जब प्रभु यीशु को हम अपने जीवन में जीने देते हैं।

मसीह को संसार के सामने प्रगट करना उसे अलग थलग ईश्वरीय व्यवहार में सीमित नहीं कर देना चाहिये, ये हमारे जीवन का तरीका होना चाहिये हमारी विशेषतायें हममें से बहुतों के साथ, परेशानी ये है कि हमारी प्रतिक्रियाएं बहुत धीमी हैं एक अद्भुत अवसर हमारे लिये आता है कि

जीवन के द्वारा प्रतिउत्तर दें जो साधारण से ऊपर है। क्या ये उस समय तक नहीं कि हम सोचते है कि कितनी बुद्धिमानी से हम बोल सकते थे या कार्य कर सकते थे जैसा यीशु ने किया होगा। पर हमने उसे खो दिया। हम शरीर से और खून से ऊपर नहीं उठे।

अधिकतर लोगों ने कभी प्रभु यीशु का तिरस्कार नहीं किया। उन्होंने हमारे उसके प्रस्तुति को तिरस्कृत किया, हमारा शीघ्र क्रोधित होना, हमारे चुभते हुए शब्द, हमारी लालसाएं और हमारे घमण्ड। वे उसके प्रेम को नहीं देखते, उसके शिष्टाचार को और हम में उसका अनुग्रह।

हम संसार को कैसे लगातार उसके आदर्श/नमूने को दिखा सकते हैं जिसने ना उसे देखा और ना जाना है? हम कैसे औसत से ऊपर जी सकते हैं? हम नम्रता से, सेवकपन, निस्वार्थता और दूसरों को अपने से बेहतर समझ कर मसीह के मन को उत्पन्न कर सकते हैं। हम सबसे उच्च के गुप्त स्थान में रह सकते हैं (भजन 91:1)। प्रभु की नज़दीकी में रहकर, उपनगर में रहने की अपेक्षा मंदिर में रहने के द्वारा हम लगातार प्रभु द्वारा व्यस्त रखे जा सकते हैं।

"परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है जिस प्रकार दर्पण में तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं"(2 कुरिन्थियों 3:18)।

जितना हम बाइबल के प्रभु में टकटकी लगाए रखते हैं, उतना ही पवित्र आत्मा उसकी समानता में हमें बदलती है।

अन्त के नोटस्

1. मेजर आयन थोमस ने अपनी विजयी जीवन में संदर्भ दिया, निक हेरीसन, ऐड, ग्रेन्ड रेपिड एम आईः जोनडरवेन पब्लिशिंग हाऊस, 1999, पृष्ठ 133–134।
2. द इडियट, वारे, हटर्ज़, इंग्लैंड, 1996।
3. नीचे दी गई दों पुस्तकों से लिया गयाः
   ब्रदर–इनडीड, फ्रैंक होम्स, लन्दन, विक्टरी प्रेस, 1959।
   "भाइयों के बीच मुख्य पुरुष" – हाई पिकरिंग, लन्दन, पिकरिंग एण्ड इंग्लिश, 1931।
4. "उनके सब क्लेशों" से संदर्भ दिया गया, मरडोक कैम्पवैल, रिसोलिस, स्कॉटलैंड सेल्फ पब्लिशड, एन.डी., पृष्ठ 90–91।
5. "शान्ति का मार्ग" से लिया गया, एच.ए. आयरनसाइड, न्यूयोर्क लोईजेयोक्स ब्रदर्श 1940, पृष्ठ 176–177।
6. टेप # 150 "फिलरटिंग विद द ट्रुथ", रवि ज़करियाह।
7. "प्रतिदिन की रोटी" से लिया गया ग्रेन्ड रेपिडस एम.आईः रेडियों बाइबल क्लास, रीडिंग फॉर जून 28, 1995 साथ ही लोयड ओपेल के टेप से, फरवरी 5, 2000।
8. "फ्लाइंग स्काटसमेन" से लिया गया, सैली मैगनुसोन, न्यूयॉर्कः कवारटेट बुक्स, 1981 एन्ड मिसलेनियस फिलीपिंग्स।
9. दि फ्लाईंग स्काटस् मेन पृष्ठ 9–10।
10. दि फ्लाईंग स्काटस् मेन पृष्ठ 163–164।

11.दि फ्लाईंग स्काटस् मेन पृष्ठ 174।
12.फिलिप्पियन्स से लिया गया, द गॉस्पल वर्क, मैरिल सी. टैनी, गैन्ड रेपिड्स, एम.आईः डब्लू. एम. बी, इरडमेन पब्लिशिंग कम्पनी, 1956, पृष्ठ 60।
13."लिविंग बाय बोज़" से लिया गया – आज की मसीहत अक्टूबर 8, 1990 पृष्ठ 38–90 और "म्यूरियल्स ब्लैसिंग्स" क्रिश्चियेनिटी टुडे, फरवरी 5, 1996 दोनों लेख रोर्ब्टसून मैक्वील केन के द्वारा।
14.जिम हेयसमेयर के पत्र से लिया गया।
15.ट्रेजेडी टू ट्रायम्फेंट, फ्रेंक रिटीफ मिल्टन केन्स, इंग्लैंडः वर्ड पब्लिशिंग, 1994, पृष्ठ 148।
16.द पिलग्रिम, ई. शूयलर इंग्लिश, इडी, वोल्यूम. IX, नं. 4, अप्रैल 1952 पृष्ठ 2।
17.लन्दन : बैनर ऑफ ट्रस्ट, 1970, पृष्ठ 149।
18.टेप # 118 "रेज्ड टू रन" रवि जकरियाह से लिया गया।
19.ट्रेम्प फॉर द लॉर्ड, कोरी टेन बूम, ओल्ड टेप्पन, एन.जे. फ्लेमिंग एच रे वेल कम्पनी 1974, पृष्ठ 53–54।
20.इस पुस्तक में एक या दो उदाहरण बनाये गये हैं, एक व्यक्ति से अधिक के अनुभवों को जोड़ा गया है।
21.ग्लोडिस ऐलवर्ड से लिया गया, "द लिटिल वुमन, ग्लेडिस ऐलवार्ड जैसा खीस्टीन हन्टर को बताया गया, शिकागो, आई.एलः मूडी प्रेस पृष्ठ 109–120।
22.टेप # 118 रेज्ड टु रन": जेकब द्वारा रवि जकरियाह से लिया गया।
23.जौन नेलसन डारबे से लिया गया, मैक्स एस. वैरमुचुक, एन जेत्र लोर्ड जौक्स ब्रोदर्स। 1992 पृष्ठ 149–150।
24."प्रतिदिन की रोटी" से लिया गया, अगस्त 23, 2000।
25.लुईस और जे.बी. निकोलसन जूनियर की अनुमति से उपयोग किया गया।
26.स्क्रिप्चर यूनियन के प्रतिदिन के नोट्स–आगे के दस्तावेज/कागज़ात उपलब्ध नहीं हैं।
27."प्रतिदिन की रोटी" से लिया गया, फरवरी 9, 1993।